।। श्रीरामजयम् ।।

।। श्रीधर्मसम्राट् विजयते ।।

।। श्रीप्रियादासकृत श्रीभक्तिरसबोधिनीटीका की पदानुक्रमणिका ।।

(सम्पादक - अंकुर नागपाल, दिल्ली)

अँग न समात सुता	४४१	अबहीं जवाब दियौ	४७४	आगे सेवा पाक निसि	५५२	आभरन नाम हरि	३	आये घर संत पूछैं	४०५
अँगुरी मरोरि कही बडो	२३७	अभू लगि जावो घर	२९०	आगे ही विराजै कछू	४७७	आय खुनसाय कही	३७	आये घर सन्त तिया करति	५७२
अंक भरि लिये दौर	३८०	अम्बरीष भक्त की जो	३९	आगें जो निहारैं भक्तराज	५८३	आय गई आश्रम में	३६	आये चार चोबदार चलौ	४४३
अंग पहिराई सुखदाई	३४३	अर्जुन और भीमसेन चलेई	७९	आचारज कही यों चढाओ	१२६	आय गये साधु सो	३७०	आये चोबदार कहैं चलौ	५९६
अंगद बहिन लागै वाकी	४६०	अर्जुन के गर्व भयो	८८	आचारज को जामात बात	११०	आय दरसन कियौ इष्ट	५७९	आये जहां जाति पांति	३५१
अक्रूर आदि ध्रुव भये	६९	अलरक की कीरति में	९३	आजु हरिबासर सो तासर	८५	आय पयौ पांय पांय	४२०	आये देखि नाभाजू ने	१२३
अक्षर मधुर और मधुर	१५१	अलि भगवान् राम सेवा	३७६	आज्ञा के अधीन चल्यौ	५३३	आय पाँय लिये तुम	५१७	आये देखि पारषद गयो	११३
अक्षर मुधरताई अनुप्रास	२	अल्ह ही के वंश	५३७	आज्ञा गुरु दई भोर	५८२	आय वहै करी परी ज्ञाति	३१३	आये दोऊ तिया पति	४०२
अगिनि जरावौ लैकै	६३४	अष्टकोन षटकोन औ	१८	आज्ञा जोई दीजै सोई	५४८	आय समुझावैं बहु जुगति	४६०	आये दोऊ बीनिबेको देखी	४०३
अचरज दयो नयो	११	अहो पृथ्वीराज कही	४८३	आज्ञा तब देई	११	आय सुख पाय पूछ्यौ	४५०	आये दौर पाँव लपटाय	४६९
अचरज देखि चख लगै	१०४	अहो रन्तिदेव नृप संत	९४	आज्ञा दई जाइबे की	२८८	आयके सुनायौ सुख	३४६	आये नर चारि पांच	४०७
अचरज दोऊ नृप पास	१५७	अहो हृषीकेश करौ मेरे	२२७	आज्ञा पाइ अँचयो लै	३८९	आयकै उठाय दई देखी	५२९	आये निज गाँव नाम	५०६
अचरज भारी भयो	३३४	आँगन में नींब तापै	१०६	आज्ञा पुनि देई यों	३४२	आयकै ननन्द कहै गहै	४७५	आये निज ग्राम वह	५७
अजगर घूमि झूमि-झूमि	१६७	आइ गयो काल मोह	२४	आज्ञा प्रभु दई जाहु	६९	आयकै प्रसाद पावै फेरि	२३०	आये निसि घर हरि	५९०
अजू मग चल्यो जात	२३६	आइ मिली आलिन में	६३	आज्ञा प्रभु दई मत	१४९	आयकै विचार कियौ जानी	२२१	आये निसि चोर चोरी	५१३
अजू हम लायक न	४५०	आई अपछरा छरिबे	२८१	आज्ञा प्रभु पाय पुनि	३५८	आयकै सुनाई सुधि-बुधि	४५४	आये निसि भये स्याम	४९८
अति अनुराग घर सम्पति	३२७	आई एक नटी गण	३५२	आज्ञा बार दोय चार	४८५	आये आगे लैन आप	२८८	आये नृपराजनि को देखि	७९
अति अपमान कियो कियो	१४९	आई कौन रीति वाकी	४२४	आज्ञा माँगि टोंड़े आये	२९४	आये आज्ञा पाय धाम	२८४	आये पहुँचाय दूर नैंन	४८२
अति उतकण्ठा देखि	५४३	आई जगदया लगि परयो	१००	आज्ञा मोकौं दई आप	४७८	आये आधी दूर सुधि	६२९	आये पुर सन्त आइ	२०९
अति पछितात वह बात	५७५	आई दुबराई सुधि	५५	आधी निसि निकसी यों	५८६	आये आपु गोद शीश	३८	आये पुर साधु सीधो	२८२
अति विस्तार लियौ	३०५	आई फौज भारी सुधि	६०१	आनि कहे आप पाये	१६०	आये ईश जानि दुखमानि	११५	आये प्रभु आप द्रव्य	२७३
अति सनमान कियौ ल्यायै	५७७	आई रेत भूमि झूमि	५६८	आनि ठाढे किये काजी	२७७	आये और गाँव	२९०	आये प्रभु टहलुवा रूप	१८१
अति ही गम्भीर मति	२६८	आई वह बेर लै कराही	१३०	आनि डारै गोनि बनजारनि	३९२	आये गुरु घर देखि	१९८	आये फिरि श्याम मास	२६३
अनमिल बात कौन दीजियै	१८१	आई सुधि प्यारे की	५४	आनि परयो पाँय प्रभु	१३६	आये गुरु घर सुनि	२२३	आये बद्रीनाथ जू तें	६१८
अन्तरयामी नाम मेरो चेरो	१८२	आई सुनि बधू पाछें	१७८	आनिकै बखान कियौ	३८५	आये गृह त्यागि वृन्दावन	३६८	आये बनिजारे लैन देख	११७
अन्न जल देवे ही कौ	६१३	आईं लगीं गाइवे कौं	४४२	आनिकै बैठायो पाकशाल	८१	आये गृह सन्त तिन्हें	६२५	आये बहु गुनीजन नृत्य	५०७
अन्न परचावैं दूध दही	२४७	आए नीलगिरिधाम रहे	३१५	आनिकै सुनाई भई बड़ी	५६१	आये घर जीत साधु	२७९	आये बहु सन्त औ	४८४
अपनौ विचारौ हियौ	३०३	आए भेष धारि लै	२५५	आप बलदेव सदा वारुणी	३२९	आये घर त्यागि राग	३६५	आये बहु सन्त प्रीति	५६७
अब कै जो आवै फेर	३६२	आए सूर सागर सो	३४६	आप ही विचारि सब	४५३	आये घर माँझ तऊ	१८६	आये ब्रजवासी पैंठ वृषभ	२४६
अब न सुहाय कछू	२८२	आगम जनाय दियौ चाहै	५४०	आपु काश्मीर सुनी	३३७	आये घर माँझ देखि	२७४	आये मधुपुरी राजा राम	४९०
अब लौ हूं प्रीति सुत	३१०	आगे नृत्य करै दृग भरै	४०४	आपुहू पधारे उन बहु	२६७	आये घर ल्याये पूछैं	२३४	आये यों अनुज पास	३६३

आये यों छठीकरा में ३५०
आये रघुनाथ साथ लछिमन ५१०
आये राम प्यारे सब २५४
आये वामदेव पाछैं पूछैं १३३
आये वाही ठौर भौंर २०४
आये वाही भाँति सभा ४४४
आये वृन्दावन मन माधुरी ५०२
आये वेई ठग माला १५४
आये सब भृत्य भए ३३९
आये सब साधु सुनि २८०
आये सो खजानौ लैन ५००
आये हरि घर देखि ७३
आये हरिप्यारे चारो खूँट ५८१
आये हरिराम जू पै ३५५
आयो एक जन धाय १०५
आयो कोऊ काल नरपति ३४०
आयो घर जानि कियो ६२
आयो चढि रंग बाँचि ५५२
आयो ढिंग पति बोलि २०१
आयो तहाँ राजा एक १५३
आयो न सरूप फेरि २४१
आयो निशि मारिबेको ११८
आयो पिता नीच सुनि ६४
आयो बनिजारौ मोल २९६
आयो भोर राना सेतबार २२९
आयो रोष भारी तब २०२
आयो वही दिन कर ४०७
आयो वाको पति द्वार १७१
आयौ अन्तकाल जानि ६२९
आयौ एक चोर घर ५२९
आयौ एक दुष्ट पोट ६१८
आयौ कोऊ काल धन ५७६
आयौ कोऊ ताही समैं ६१६
आयौ कोऊ शिष्य होन ५१९
आयौ कोऊ संग ताही ५८७
आयौ गुरु गेह यों ५६४
आयौ निज पुर ढिंग ५५४
आयौ पति गौनो लैन ५८४
आयौ प्रभु देखिवे कौं ५०४
आयौ फिरि विप्र नेह ३०७
आयौ भेषधारी कोऊ ५५९
आयौ भोर भूप हाथ ४८१
आयौ मग गाँव भिक्षा ३९६
आयौ यों विचार अनुसार ४१३
आयौ राजसभा बहु ४७०
आयौ वन कोऊ भूप ५३५
आयौ वाही ठौर चलो ३०२
आयौ वाही राजा पास ४६८
आयौ वृन्दावन वनवासी २४०
आयौ साधु विप्रधाम ३०६
आवत अनन्त सन्त औसर ४०६
आवत अनेक साधु निपट २१९
आवत अनेक साधु भावत १८३
आवत कमाय जल प्याये ४२९
आवत न ढिग औ २७८
आवत महोच्छौ मध्य ३९२
आवत मिलाप होय यही ३२४
आवत सुने हैं वन ३७
आवत ही कही मोहि ७२
आवत ही मग माँझ ५७९
आवत ही राजा देखि ४६
आवत ही लोटि गयो २४९
आवत हो भोग महासुन्दर ४१४
आवन न पायों वाही ३१०
आवै एक प्रेत मो १९४
आवै कभू प्रेम हेम ३३१
आवै जौ प्रतीति कहौ ५१२
आवैं जब सन्त सुख २९२
आवैं दरसनी लोग जुतनि ६१८
आवैं बहु सन्त सुख ४३४
आवैं बहु सन्त सेवा ४१७
आवैं हरिदास तिन्हैं देत ३८४
आवैं हरिप्यारे तिन्हें ५४६
आवैं हरिप्यारे साधुसेवा ५४७
आवो जिनि ध्यान करौ १६३
आशय अगाध दोऊ भक्त २१२
आशय सो गँभीर संतधीर १२६
आस्य सो वदन नाम १०७
इच्छा भगवान् मुख्य गौन २१९
इच्छा सो सफल श्याम ४००
इतनी जतावनी में भक्ति ६१०
इतनी विचारि भूख ४३०
इतने ही माँझ सुनी ३७
इतौ अपमान पानि ६०५
इनहीं के दास-दास ६३१
इनहीं को रूपधरि २८०
इनहूं निहारि उठि मारि ४१३
इन्द्र औ अगिन गये ८६
इन्द्रनीलमनि रूप प्रगट ५४५
इन्हैं अब जान देवो ११२
इष्ट को स्वरूप २१
ईशता बखान करौ ३३१
उअम्रि वरष पाँच १२
उज्ज्वल वसन तन एकले ५८२
उठत सँवारे कहैं ३१
उठि चिक डारि तब ६०३
उठि बहुमान कियो दियों १७६
उठे आप धोये पाँव ६२४
उठे जब मायने जनाय ३५०
उठ्यो चन्द्रहास जिहि पास ६४
उतनोई करैं जामैं तन २७०
उतरिकै आय रोय पाँय ५८८
उनकी तौ बात बनि १८६
उनको हजार सोहैं हमको १४५
उनिकौं लै मान कियो २७३
उपजत अन्न गांव आवै ३८८
उपजे बनिक कुल सेवें १८०
उपट्यो प्रगट तन मन ६००
उभै सुवा सारौ कही ४६९
उर रंगभवन में राधिका ६३०
ऊपर किवार लगे परयो १६७
ऊपर महंत कही अजू ३२३
एक एक बात में समात ३५८
एक ओर बैठ्यौ मीर ५६२
एक कहै डारौ मार १५३
एक दिन गई ही १८४
एक नृपसुता सुनि ४३
एक पै तमाचो दियौ ४२१
एक मोको दीजै दान ९२
एक है उपाय हाथ २५१
एकने रुपैया लिये ३७३
एकादशी व्रत की सचाई ८५
एतौ ब्रजवासी सब क्षीर ५६६
एतौ रूप सागर में ४३४
ऐंचि लियौ एक तामें २२९
ऐंसे भूप नारि पति २११
ऐतौ घर आये वे तो ४६३
ऐपै तजि देवो क्रियो देखि १२०
ऐपै तनु नूनताई ३५
ऐसी करी सेवा जासों २१३
ऐसी चाह होय मेरे ५२८
ऐसी भक्ति होइ जोपै ८७
ऐसे आय परीं गनी २९४
ऐसे दिन तीन आज्ञा ५२१
ऐसे प्रभु भाव पगे २१
ऐसे प्रभु लीन नहीं काल १२२
ऐसे बार दोय चारि २४६
ऐसे में अकाल पयौ ४२२
ऐसे ये उदार राह ४९०
ऐसे शिष्य किये माला ४९३
ऐसे ही कटायो बार तीनि १२२
ऐसे ही करत मास तेरह १८३
ऐसे ही करत वृन्दावन १७४
ऐसे ही कुलिश १५
ऐसे ही बरस एक २२५
ऐसे ही बहुत दाम ४२८
ऐसे ही बहुत दिन ३५
ऐसे हैं दयाल दुःख देत ३२०
ऐसै पुत्र आदि आये साँचे १०५
ऐसैं दिन बीते दोय १३२
ऐसो हरिदासपुर आस पास ७७
ऐसौ एक आप कहि १६०
ऐसौ तुम कहौ जामें ७८
ओड़छै कौ भूप भक्तरूप ४८८
औचकहीं घर माँझ साँझ १३८
और एक न्यारी रीति ३३१
और एक भाई तानै २२५
और और ठौर फिरि २३८
और दिन न्हान गये २९७
और सब सन्तनि ४२८
औषधी पिसाये अंग अंगनि २१७
कछुक उपाय कीजै ५४४
कटि गई एड़ी एपै ६०२
कट्यो कर चले हरिरंग ३९७
कण्ठी धरि आवै कोय ४८८
कथा ऐसी कहैं जामें ५९६
कपट कुचाल मायाबल १६
कबीर रैदास आदि २८५
कमला गरुड जाम्बवान २६
करत उपाय सन्त टरत ५७०
करत करत अनुराग बढि १९८
करत टहल प्रभु वेगि १२७
करत प्रनाम राजा बोली ५५७
करत रसोई घोरि गरल ४६०
करत रसोई जोई राखी ६१५
करत विचार वारि धार १६६
करत विचार शोच सागर ११६
करत सिंगार छबि सागर ५४५
करत हैं सोच सब ३७
करति सिंगार फिर आपु ४७
करन सगाई आयो पायो ४५०
करनामृत ग्रन्थ हृदै ग्रन्थि १७५
करमा सुनाम एक खिचरी १९७
करमानन्द चारण की ५३१
करयो ऐसो राज सब ६८

करयो हठ भारी मिलि १४२
करि अभिमान दान देन ८७
करि कैं सिंगार सीता २९८
करि गोठ कुण्ड जाय २२५
करि दई संग भरी २०१
करि दिगबिजै सब ३३३
करि नित्त नेम चल्यो ३०९
करि परिहास काहू २३
करि समाधान निज ग्राम १६२
करिकै अलाप चारी ४९
करिकै परीक्षा दई २९६
करिकै प्रसाद दियौ लियौ ६१६
करिकै रसोई सोई लै ३५९
करिकै विचारि औ ३१८
करिकै समाज साधु मध्य १२२
करिकै सिंगार चारु आप ३८१
करिकै सिंगार सीता ३०३
करिकैं रसोई द्विज २६७
करी अन्नरासि आगे २९३
करी ऐसी रीति डारे ६४
करी देवी शिष्य सनि ३३९
करी लै निदास देस २१८
करी लै परीच्छा भाट ४६६
करी लै रसोई सोई २९१
करी वही बात मूसि २०२
करी वही रीति लोग ५६३
करी वाही भाँति आयौ २४३
करी साधुसेवा रीति ४८६
करी साष्टांग न्यारी २८५
करी सो ज्यौंनार तामें ४५२
करुणानिधान कही सब १०७
करुणानिधान कोऊ सुने ६००
करेऊ उपाय पात पला १४१
करै घरी दस तामैं २३१
करै द्विज द्वेष तासों २४८
करै नित चोरी अहो ३२
करै हरिसेवा भरि रंग ५५६
करैं गुरु उत्सव लै ३८४
करैं जाकौं शिष्य सन्तसेवा ५७५
करैं तिरस्कार कही सकौगे ५०९
करैं यही बात हमैं ३१४
करैं रखवारी सुख पावत ६१८
करैं रखवारी सुत नाती ६२५
करैं विप्र सेवा तिन्हें ६०३
करैं वेश्या कर्म अब २९३
करैं साधुसेवा जामें ६१५
करैं साधुसेवा बहु पाक ४२२
करैं सेवा पूजा और ३५२
करैं हरि भली प्रभु २३१
करो अंगीकार सीधो २५९
करो समाधान सन्त मैं २३६
करो सिन्धु पार २९
करौ जू रसोई कौन ३३८
करौ यह राज जू ९५
करौ साधुसेवा धरौ भाव ५७१
करौ हरि साधु सेवा १५४
करौ हरिसेवा भरि भाव ५४४
कयौ आय दरसन बिनै ५५८
कयौ उनमान भक्ति ४६८
कलश सुधा को १७
कविता प्रबन्ध मध्य रहै ३३५
कहत कुम्हार जग कुल ५६७
कहत तो कही गई २२७
कहत बैराग गये पागि ३५७
कहत समर्थ गयो १०
कहत-कहत और सुनत ३२९
कहा करौं अहो मोपै ३१९
कहा नाम कहाँ ठांम ७७
कहा परिहास करो ढरो १४०
कहा लौं बखान करौं ३८१
कहाँ लौं बखानौं भरै ३६१
कहां लौं प्रताप कहौं ३२८
कहि कै पठाई वासों ३५३
कहि रह्यो द्वारपाल नेकु ३२५
कहिकै पठाई कहौ कीजियै ६०२
कही अजू जानौ तुम ४५३
कही अब पागो मोसों ३९६
कही एक घास धनरासि ४५४
कही जगन्नाथदेव लै प्रसाद १९५
कही जावो वाही ठौर १८९
कही जिती बात आदि ६८
कही जिती बात सुनि १५७
कही जू पधारो पाँव १७१
कही जू बनावौ ढिंग ५४६
कही जू विराजौ गाजौ ४४५
कही डारि देवौ कै ४६२
कही तुम कटी नाक ५८९
कही तुम भली तेरी ५९७
कही दास साधु सेवा ३७४
कही देवै विप्र सुता १४४
कही नाभा स्वामी आप ४१५
कही निसि सुपने मैं ३९४
कही नृप भलैं चौकी १९४
कही पुनि आप मैं ३१७
कही पूवा पावैं आप ४९८
कही बार-बार तुम ४७३
कही बोल कियौ तोल ५६७
कही ब्याली रूप बेनी ३६३
कही भक्तराज तुम कृपा ११४
कही भक्तिगन्ध दूरि ४४४
कही भरि ल्यावो जल ५७२
कही भली बात सब ५३
कही मैं तो न्यून ५०३
कही युग सुई ल्यावो १७२
कही राजा रानी सों २७६
कही वही साधु सों जु १९७
कही विप्र जाय ४५
कही शुकदेव जू सों ९७
कही श्रीगुसाईंजी कौं ४११
कही सब बात स्याम ५३६
कही सब रीति सुनि ८१
कही समझाय सुनि निपट ४३९
कही समुझाइ वोई ११
कही हरे बात मेरे २१०
कहूँ जात आवत न ५९०
कहूँ है सनेह तेरो ५१९
कहै अहो नाथ सब १३८
कहै देश भूमि में ६१
कहै नृप साँचो ह्वैकै ४९५
कहै या जनम मैं न ४९४
कहै सोई करैं अब पाँय २०३
कहै सोई करैं दृग २०९
कहैं जन भक्त कहा १८६
कहैं तुम कौन वारमुखी २९३
कहैं मोकों भक्त क्रिया २२४
कहैं मोसों रांका ऐपै ४०२
कहो कहा जेवों कछू ८०
कहो तुम जाय रानी बैठीं ४३
कहौ अब कीजै जोई ४५८
कहौ को उपाय स्वर्ग ८३
कहौ तुम जाय ईश ५९०
कह्यो जोई कियो साँचो १०२
कह्यो तेरो द्वेषी याहि ६७
कह्यो नव मन्दिर में ४५
कह्यो नृपसुतासों जु ४४
कह्यो बहु भाँति ऐपै १६२
कह्यो सुत कहाँ अजू २२३
कह्यौ आनि अभूं जावौ ३९०
कह्यौ कुवां गिरौ चले २८३
कह्यौ जू चरित्र बड़े ३५४
कह्यौ फेरो तन वन ६२९
कह्यौ रिस भरि धूरि ४१६
कह्यौ स्वामी नाम सुन्यौ ४९६
कह्यौ हाँ जू मान दई ५८३
कागद लै आई देखि ४४०
कागद लै कोरो कयौ ३०४
कागद लै डायौ गोद ४४९
काटि दियो सीस तन ६०६
काटि लियो शीश ईश २१५
काटि लेवौ शीश ईश २१४
काटिकै अँगूठा डारौ ४५१
काटिबो खडग जल बोरिबो ९९
काटै हाथ कौन मेरो १९४
काढि तरवार तिया ५२७
काढिकै दिखाई मानौं २२६
कान दैकैं सुनो अब १३७
कान में सुनायौ नाम ३९१
काना कानी भई द्विज ३१३
कानाकानी भई नृप ४६०
कान्ह भगवान् ही की ५९७
कान्हा हो हलालखोर ५२०
काम क्रोध लोभ मद ६८
कामरी पन्हैयाँ सब नई १८२
कामरीन फारि मधि २८६
कामहू निशाचर के १७
कायथ त्रिपुरदास भक्ति ३४०
कालिन्दी के तीर ठाढी ५९१
कावापति सींवा सुत ५४१
काव्य की बडाई २
काशी जाय वृन्दावन ५१७
काशीबासी साहु भयो ३११
काहू कहि दियौ जाय ४२५
काहू कही कृष्ण अवतारी ५१८
काहू कही भट्ट श्रीगदाधर ५२४
काहू कान कही सुत ६७
काहू कौं बिडारैं झिरकारैं ५९७
काहू ठौर जाय गाड़ि ५३१
काहू दास दासी के न ३४१
काहू ने सुनाय दई ५२१
काहू पै न होय दियो २८६
काहू भाँति छोडो नृप ९०
काहू सीखि लियौ साधु ४९९
काहू सौं न कहौ यह १८४
काहे कौ मँगाये पच्छी २१७
कितौ समुझावै ल्यावौ ६०६

किन्दुबिल्व ग्राम तामें १४४
किये जा बिछौना तीनि ३४९
किये नाना ग्रन्थ हृदै ३७४
किये परशंस मानो हंस ११४
किये लै उपाय रही ३५०
किये शिष्य कृपा करी २८४
किये सब भक्त हरि साधु २०४
किये हूँ उपाय कोटि ४०९
कियो अपराध हम साधू १७३
कियो बहुमान खान २६२
कियो मद पान सो २३
कियो यों विचार ऊँचे ५६२
कियो रूप ब्राह्मन कों १४२
कियो सो महोच्छो ज्ञाति १११
कियो हो जो द्वार २१४
कियोई बनाय सब २५२
कियौ उपदेश नृप हृदै ३०२
कियौ तहाँ वास प्रभुसेवा ५०८
कियौ नृत्य भारी जो ३५४
कियौ प्रतिपाल तिया ५७५
कियौ मने लाख बेर ५९१
कियौ लैं संकेत वाही ५१०
कियौ विप्र तन त्याग ५१४
कीजिये कवित्त बंद १
कीजिये जु कछु अंगीकार १३९
कीजिये परीक्षा उर आनी ९७
कीजिये रसोई जोई सिद्ध ३२३
कीजिये विचार अधिकार १४५
कीजै कोटि गुनी प्रीति ११०
कीजै पुण्य दान बहुँ ४९१
कीजै वाकौ काज कही ४२७
कीनी घर चोरी तऊ ६२८
कीनी ठौर न्यारी विप्र ४३४
कीनी भक्तमाल सुरसाल ६३२
कीनी वही बात माला २६९
कीनी वही रीति दृगधारा २१०
कीने हरिदास मैं तौ १८६
कीन्ह्यो वाही भाँति अहो ९१
कीरति अभंग देखि भिक्षा ३२०
कील्ह औ अगर १२
कुन्ती करतूति ऐसी करै ७०
कुवां में खिसिल देह ३४७
कूबाजी निहारि जानी ५७२
कृष्णचैतन्यनाम जगत ३३२
कृष्णदास ये सुनार ६११
कृष्णवेना तीर एक द्विज १६५
केतिक हजार लै बजार २३५
केशनि कुटिलताई ऐसे १४
कैद करि साथ लिये दिल्ली ५९३
कैसे करि ल्यावैं वैतौ २१६
कैसे चढौं पालकी में ४२६
कैसे ये प्रवीन ईश २०
कैसो अपकार करै तऊ १५८
कोउ दिन बीते नृप ६१
कोऊ कहैं द्वेष कोऊ १९२
कोऊ जाय द्वार ताहिं २७४
कोऊ दिन रहे नाना ३३९
कोऊ प्रभु जन आय ३४१
कोऊ बड़ौ नर देखि ६१९
कोऊ भेषधारी सो व्योपारी १२०
कोऊ सिंह व्याघ्र अजू ५८८
कोटि कोटि अजामिल ३३२
कोटिक उपाय करै ५४५
कोटि-कोटि रसना ४७०
कोठरी सँवारि आगे ४४०
कोढी भयो राजा किये २१६
कोप भरि राजा गयौ ५५१
कोल्ह अल्ह भाई दोऊ ५३२
कोल्ह नैं सुनाये सब ५३३
कौन वह बेर जेहि १३०
कौन वह विथा ताकौ २०२
कौनसो तिलोक अरे दूसरो ४०८
कौषारव नाम सो बखान ६९
क्यों जू उठि जाऊँ २७३
क्यों रे तूं जुलाहे धन २७२
क्रम सौं निहारि कही २२६
क्रिया सब कूप करै ११५
क्रोध भरि झारे आय ३३७
खातीको बुलाय कही ३५१
खाय सो खबावो सुख १८३
खायौ विष ज्यायौ २८७
खिरकी जु मन्दिर के २४२
खुलि गई आँखैं अभिलाखैं १६९
खुलि गईं आँखैं अभिलाखैं १८९
खुलि गईं आँखैं भाखैं ४२३
खुलि गये नैन ज्यौं १७५
खेत की तौ बात ३०६
खेत कौ कटावौ औ ५६३
खेत पर जाय वाही २४८
खेमालरतन तन त्याग ४९१
खेलत खिलौना रीति प्रीति १२९
खेलत में जाय मिले ५९२
खेलत हो लाल संग ४१०
खेलति सहेलिन सों आइ ६३
खेलै भूप चौपरि कों १९३
खैंचि लई गाँठि मूठि ५६
खोजीजू के गुरु हरि ३९९
खोलि डारी कटिपट भवन २०६
खोलिकै दिखायो नृप ६०६
खोलिकै निसंग कहौ २५१
खोलिकै लपेटा मध्य ४६८
खोलैं जो किवार थार ३१७
गंगा कौ सरूप कहौ ३३४
गंडकीकौ सुत बिन जाने ३९४
गई आस टूटि तन २०५
गई घर झाली पुनि २६७
गई पै पास स्वास १७२
गई वाही गाँव जहाँ २००
गए संग साधुनि लै ३४९
गढागढ पुर नाम माधौ ४५६
गदाधर भट्ट जू की ५२६
गये उठि कुंज सुधि ३६८
गये उठि पाछे बोलि २९७
गये उठि पाछे भक्त ३२४
गये कुंवा खोदिवे कौं ५६८
गये ग्राम बूझी घर हरि ३६२
गये घर माँझ वाके ५०३
गये चलि मन्दिर लौं ४८
गये जन दोय चार २७२
गये जब द्वार उठी ३०३
गये जहाँ हंस संत २१७
गये ढिंग गाँव की २४१
गये दुर्वासा ऋषि वन ७१
गये द्वार द्वारपाल बोले ५२१
गये नर पत्र दियौ ५५३
गये नीलाचल जगन्नाथ जू १०८
गये पुर पास बाग ६२
गये बैठे आयौ जन ३५५
गये ब्रज देखिबे का ३२६
गये वन मध्य ठग २५४
गये वाके घर वह ३२३
गये वाके प्रान रोय २०९
गये वाही ठौर शिरमौर २२३
गये सब त्यागि प्रभुसेवा ५०५
गये हे बहिरभूमि तहां ४१३
गये हे बुलाये आप २९८
गयो जा लिवाय ल्याय १५९
गयो तहाँ साधु मानि १९६
गयो मेरो सन्त रीति १९७
गयो लै महल माँझ १५५
गयौ अभिमान आनि मंदिर ११३
गयौ गयौ भूलि फूलि ४६६
गयौ गुरु पास तुम ३११
गयौ गृह त्यागि हरि ५३७
गयौ जाय देख्यौ उर ४६३
गयौ जो सगाई करि ४५४
गयौ ढिंग मन्दिर के ४४६
गयौ हो विदेश तहाँ ५३८
गरल पठायौ सो तौ ४७६
गरुड को आज्ञा दई १०९
गर्भ ते निकसि चले ९८
गलते प्रगट साधुसेवा १३
गहने धयौ हो राग ४४९
गहि लीयो कर जिनि १३२
गही प्रतिकूलताई जौ २५
गह्यो कर रानी सुखसानी ५६
गाँठि में मुहर मग १५२
गाँव पहिरायो छबि ४४१
गाँव में न जात लोग ६१४
गाए पांच सात सुनि ३४६
गागरौन गढ बढ पीपा २८२
गाठैं पगदासी कहूँ २६१
गाड्यौ एक ठूंठ द्वार ३१२
गायो भक्त इष्ट अति ३७२
गायौ रघुनाथ जू कौ ५०७
गावत बजावत लै नीर ११०
गिरिधर ग्वाल साधुसेवा ६२३
गिरी जो जलेबी थार ११९
गिरे मुरझाइ दया आइ ६०
गियी भूमि मुरछा ह्वै २२९
गुण पै अपार ७
गुन सो अनूप कहि कैसे ३६६
गुन ही को लेत जीव ३७५
गुरु उपदेशि मन्त्र कह्यो १०७
गुरु को वियोग हिये ३४
गुरु गुरुताई की ९
गुरु भरमावैं नीति कहि १०२
गुसाईं भूगर्भ वृन्दावन ३८३
गुसाईं श्रीसनातनजू ३८१
गूजरी को धन दियौ ३०४
गेह ही में शंख चक्र ५७१
गेहूँ कोठी डारि मुंह ४२३
गोकुल के देखिबे कौं १८८
गोकुल के नाथ जू ५२०
गोद में उठाइ लियो १००

गोपद सो ह्वैहैं १६
गोपिन के अनुराग ३३०
गोबर्धन तीर कही आगे ३४७
गोमती कौ सागर सौं ५७१
गोवर्द्धननाथ जू कें हाथ ६३१
गोवर्धन नाथ साथ खेलैं ४१०
गोवर्धन राधाकुण्ड ह्वैकै ५६५
गोविन्द अनुज जाके ६१०
गौड देशवासी उभै विप्र २३८
गौड़वाने देश भक्ति ४९३
ग्रामसो जबत कयौ कयौ ३८८
ग्रीवा की ढुरनि कर ४३२
ग्वालियर वास सदा रास ५९२
घट बढ जानि अपराध ६३१
घट भरि धयौ सीस ५९५
घटती न मेरी आप ५०६
घण्टा लै बजावैं नीके १२९
घर में तौ नाहीं मण्डी २७३
घर ही विराजे आप २४५
घर-घर जाय कहैं ६००
घरतें निकसि चले वन २१२
घरहूँ को आये सुत सुखी ३२६
घरी दस मन्दिर में ६०१
घिरि आये लोग जिन्हें २९३
घूम्यौ कह्यौ कान धरौ ४८३
चँदवा बुझाय दियौ तेली ३०५
चक्र दुख मानिलै ३९
चटथावल गाँव बाग ३३८
चढि आये प्रभु पास ३९७
चढी फौज संग चढ्यौ ४५९
चढी मुख बोलै हौं ३३९
चढ्यो हो जहाज १०
चतुर्भुज रूप प्रभु २८१
चतुर्भुज षटभुज रूप ३३१
चन्दन लगाय आनि ५४९
चन्द्रहास जू सों भाष्यौ ६५
चरण प्रछाल संत १३
चरन पकरि गिरि जावो ४३५
चरित अपार उभै भाई ३६३
चरित अपार कछु मति ४२८
चरित अपार भाव भक्ति ३७४
चलत चलत बात नृपति ३००
चलत चलत वामदेवजू के १२८
चलत जहाज परि अटकि २८
चलिवे न देत सुख ४६९
चली उठि हाथ गह्यौ ५४७
चली यै सिंगार करि १७२
चली लै लिवाय चेरी २१०
चले अकरूर मधुपुरी ते १०१
चले अचरज मानि देखि ४५५
चले अनखाय गहि पाँय ९१
चले अनखाय पाँय गहि ८९
चले ई अधर पग धरै ११६
चले उठि धाये नीठ ४१२
चले और गांव जहाँ ३२३
चले गाड़ी टूटी-सी ४३९
चले चढि-बढि कियौ ४२६
चले जात अल्ह मग २४९
चले जात मग उभै २२
चले जात मग ठग २३४
चले ठौर मारिवे कौं ४९५
चले तब संग गये ५९६
चले तहाँ धाइ भूप १९५
चले द्वारावति छाप ल्यावैं ५७१
चले नीलाचल हीरा जाय ४६२
चले पहुँचायबे को २८९
चले पीपा बोध दैन ३००
चले प्रभु गाँव जिनि तजो ११५
चले भौन माँझ मन १७१
चले मग जात ज २५०
चले मग दूसरे सु २९०
चले लागि संग अब २५४
चले लै गहाय कर छाया १७४
चले लैके न्हान संग गंग ११६
चले वाही ठौर स्वर ५६८
चले वृन्दावन मन कहै १७०
चले वृन्दावन मन लग ३२२
चले श्री आचारज पै ११२
चले संग वाके त्यागि ५२२
चले सावधान राधावल्लभ ५७८
चले सुख पाय दृग १७३
चले सुखपाय दासी आगे २१०
चले ही बनत चले २७६
चलेई लिबायवे कौं ५०५
चलो आगे देखौ कोऊ १०५
चलो जिन टारौ तिया ४२०
चलो देखौं अहो यह १६८
चलो लै दिखाऊँ तब ४०१
चलौ गृह वास करौ ५८८
चलौ जू प्रसाद लीजै ६२४
चल्यो एक काशी जहाँ ३१३
चल्यो ततकाल देखि गिरयो ६७
चल्यो द्विज तहाँ जहाँ १४५
चल्यो प्रभु पास लै १३१
चल्योई करन पूजा देशपति ६६
चल्यौ अनखाइ समझाइ १४६
चल्यौ चढि साँड़िनी पै ५४०
चल्यौ दौरि राजा जहाँ २४९
चहल पहल धन भयौ ४०८
चहुँदिसि डायौ नीर ५८१
चहूँ दिसि परी हई ३९३
चातुरी अवधि नेकु आतुरी १८७
चारिहू बरन की जु १८२
चारो ओर दौरे नर ५८६
चारौं तुम जावो टरि ४४४
चालिस औ आठ दिन ९४
चाहत महोच्छौ कियौ ५८१
चाहत मुखारविन्द अति २९
चाहै कछु वारौं परे ५६२
चाहै याहि टारौ यह ४३३
चाहैं एक राम जाकौं २७९
चाहो सोई करौं ह्वै २९५
चाहौ हरिभक्ति तौ ४४२
चिउडा छिपाये काँख ५६
चित्रकेतु प्रेमकेतु भागवत ६९
चित्रमुख किये लै ४५२
चिन्ता जिनि करौ जाय ४३९
चिन्ता जिनि करौ हिये ३८९
चिन्ता जिनि कीजै तीनों ४८२
चिन्तामनि सुनी वन माँझ १७६
चीरा जरकसी सीस ३६८
चोपनि के ढेर लागि १३०
चोर चहैं चोरी करैं २९४
चोरी गये बैल ताकी २४६
चोरी त्यागी दई अति २४७
चौदह बरष पीछे आये ९६
छठेई मिलान बन मैं २८९
छाक नित आवै नीकै ३०७
छाडो उपहास अब करो ११४
छाती खोलि रोये संत २०७
छाती सों लगायौ प्रेमसागर ४०९
छापे दिये स्वामी हरिदास ३७३
छिनु में सभीत १६
छीपा वामदेव हरिदेवजू १२७
छुयो गयो नेकु कहूँ ३४
छूट्यो तन वन राम २३०
छोंकर के वृक्ष पर बटुवा १८८
छोड़ि दई रीति तब ३९२
छोड़िकै कहार भाजि गये ३९०
जग दुरगन्ध कोऊ ऐसी ५८६
जगता कौ पन मन ६२१
जगन्नाथ छेत्र माँझ बैठे १७७
जगन्नाथ रथ आगे नृत्य ४०९
जगन्नाथदेव आगे पालकी ३९७
जगन्नाथदेव आपु भोजन १९६
जगन्नाथदेव जू आज्ञा ४६३
जगन्नाथदेवजू की आज्ञा १४५
जन मन हरि लाल ६३०
जनकौं बुलाय समुझाय २६५
जन्म पुनि जन्म को ७४
जब ही हरित देखैं ३१२
जब-जब आवैं बान ५१३
जमुना चढत काट करत ३८०
जमुना लौं आयौ अचरज ५९५
जल अन्हवाय सूखे पट १६७
जल चढि आयो नाव १२५
जल तैं निकासि बहु १३५
जल दै पठायौ भलीभांति ४४०
जल सो रुधिर भयो ३४
जव हेतु सुनो १६
जसुमति सुत सोई ३३०
जसू नाम स्वामी गंगा २४६
जहाँ जा छिपावैं पात्र ५६६
जा दिन प्रगट भयौ ५०२
जाइ गहि पाँय रह्यौ ४५५
जाऊँ एक गाँव फिरि १२९
जाओ निहशंक वे प्रसाद ११२
जाके तुलसी हैं ऐसे १४०
जाके यह होय सोई २५७
जाके संग रंग भींजि ४७७
जाके सिर कर धरयो ११९
जाके हम चाकर हैं २३०
जाके हो अभाव मत ६२३
जाको जो स्वरूप ७
जाकौ कोऊ खाय ताकी ३०७
जागरन एकादशी करे २४२
जागरन माँझ हरि भक्तन १४३
जागि परे दोऊ अरबरे ६०९
जागिकै निहारे ठौर और १०९
जाति को सोनार पर ११८
जाति कौ चमार करै ५०३
जानकी हरण कियो ३८
जानकीरवन दोऊ दर्शन १९१
जानहारौ होई सोई ६२९
जानि गई भक्तबधू चाहति १६१

जानि गई रीति प्रीति २९२
जानि गयौ आप कछु ५६०
जानि लई बात खोलि १५२
जानि लई बात निधि १७७
जानि सुखमानि हरि ८
जानिकै आवेश तन शिष्यन्नैं १२५
जानिकै छिपाई बात माता २३३
जानिकै प्रभाव पाँव लीने ६१९
जानिकै प्रवीन उठै ५०७
जानिकै सुजान कही लै ३६७
जानिवे कौं पन पृथीपति ६२०
जानी इन कोऊ नाहिं २३४
जानी जब भई तिया १४७
जानी बहकाये प्रभु दाम ४३६
जानी भक्ति रीति घर २८५
जानी भट्ट संग सौं ५२५
जानी भोर गौनो होत ५८५
जानी यहै बात पहुँचाये ५९५
जानी यों जुबति जाति ४०२
जानीऊँ न जाति जाति २०७
जाने ग्वालबाल एक ४४७
जाने सुता भाग ऐसे ४५१
जानों निजमति ऐपै १
जानौ कृष्णदास ब्रह्मचारी ३८१
जान्यो जब नाँव ठाँव १५८
जाय तौ बिलाय गयो ३०१
जाय पहिचानि संग चले ५०९
जाय लग्यो टापू ताहि २८
जाय लपटायौ पाँय भाव ५२२
जाय वही कही लही ५२१
जायँ जा महोच्छौ में ५८०
जायके निशंक यह ४४
जायकै निहारे तन मन ४२६
जायकै पुकायौ साधु ३५५
जायकै भवन सीता ३०८
जायकै सिखायौ बादशाह ५९६
जायकै सुनाई दास ३८७
जायकै सुनाई भई अति ४७६
जावो एकबार वह वदन ५३
जावो बालमीक घर बडो ७८
जावौ यहै ध्यान करौ ४३३
जाही भाँति होहु ताही ३८८
जाहीं रूप मांझ १४
जितनौ निकासैं ताते ५७७
जिती द्विज जात दुख ४३४
जिते अवतार सुखसागर १४
जिते गुनी जन तिनै ३५३
जिते प्रतिकूल मैं तो २६५
जिते मेरे साधु कभूँ ७८
जिते व्रत दान और स्नान १४१
जिते सभाजन कही चाखौ ३८५
जिते साधु संग तिन्हें ७३
जितौ गौड़ देश भक्ति ३३२
जिनके न अश्रुपात ४
जिनही के हरि नित ७३
जिन्हें जग गाय किहूँ सकै ७४
जिमींदार सुता ताके भये १९९
जीवको न बध करैं ३९४
जीवन अवधि रहै निपट ५४०
जुगलकिशोर गावैं नैंननि ५४७
जूठनि लै डारौं सदा ८०
जूनागढ वास पिता ४२९
जे वे रहे दूषि कही ४३५
जेंवत न बोधि हारी ४६१
जेतिक प्रकार सब व्यंजन ८१
जेतिक वे सोती मोती १३७
जेबरी लै फाँसि दियो २१४
जै-जै धुनि भई व्यापि ५४०
जैसी कीन्ही सेवा बहु २८५
जैसी तुम जानो तैसी ५१२
जैसे रंग भोजि रही ४९
जैसो मन मेरे हाड १६८
जोई आवै द्वार ताहि २९५
जोग्यताई सीवाँ प्रभु ६२६
जोपै अन्धकार ही मैं ५९४
जोपै कहौ भक्त नाहीं ७६
जोपै तन त्याग करौं २१५
जोपै नहीं देत मेरौ ४३१
जोपै प्रेम लक्षना की ६३२
जोपै बुधिवन्त रसवन्तरूप १९
जोपै यापै कृपा करी २८७
जोपै लै पिछान कहूँ १५३
जोबनेर बास सो गोपाल ४२०
जोरावर भक्त सों बसाइ १०९
जौलौं रहैं दूर ४
ज्यों-ज्यों बल करैं १७४
झनक मनक जाइ जोरि १७२
झारिकै पतौबा गये बाहिर १२३
झीथड़ै ढिंग ही में ५६३
झूठे सम्बन्धहू तैं नाम २२८
झूठे ही उसांस भरि ३८७
टहल छुटाई औ सिरहाने ५४३
टहल बनाय करी नृप ३०९
टहल लगाय दई नई ५६४
टहलुवा न कोई साधु १८०
टारी बार दोय चारि ४१८
टीका अरु मूल नाम भूल ६३२
टीका को चमत्कार ४
टोडर दिवान कह्यौ धन ५०१
ठाकुर विराजैं तहाँ खेलैं ४१६
ढे मण्डा मांझ पटठ २७०
ठाढौ कर जोरि विनै ५९३
ढौ हाथ जोरि मतिठ ५०६
तैर तैर रासकै विलास ३५६
तैर-तैर पकवान होत ४५२
डग मग पांव धरै ३०१
डरपत हियो ड्योढी ५४
डरे द्विज भारी महाप्रभु ३३३
डरे शिव अज आदि १००
डयौ वह शाह मति ६१७
डारि दियो पीत पट ५१
डारी एक छानि कियो २६१
डारे सब बेंचि पागपेच ४५९
डारौं याहि मार याको ५९
डोठि हू न सोहीं ३३
डोलत फिरत आय ४२९
डोला पधराय दृग-दृग ४७२
डोलैं जगन्नाथ पाछें काछें १५०
डोलैं धाम-धाम स्याम ५६६
ढिंग जो खवासिनि सौं ५४२
ढूंढत परसराम पिता ५८७
ढूंढत फिरत बन बन ३८०
ढूंढि फिरि हारे भूख ४३६
तऊ दुराराध्य कोऊ ८
तऊ दृढ कीनी फिरि १०८
तऊ न प्रसन्न होत २९
तजिकै शरीर काहू नृप में १२४
तजी लोकलाज हिये वाही १६५
तजे उन प्रान पाये वेगि ८५
तज्यो जल अन्न अब २०३
तत्वा जीवा भाई उभै ३१२
तन त्याग बेर नहीं ३९९
तब तो पठायो प्रहलाद १००
तब तौ खिसाने भये २४५
तब तौ प्रगट श्याम ४०३
तब तौ प्रसन्न नृप पाँव १२६
तब तौ लजानौ हिये ८०
तब दई सुता लई ३१४
तब न प्रमान करी ३७२
तब फिरि आयकै २१
तब समझायौ सन्त ३७४
तबतौ खिसानी भई ४७४
तबतौ प्रसन्न भयौ अन्न ६१७
तबतौ बुलाये समुझाये ६०७
तबतौ विचारी अहो मोड़ा ५५१
तहाँ जाय देवता कौ ४९३
तहाँ वनिजारौ आय संपति ५२२
तहां एक ठौर साधु भोजन ३८६
ताकी दारु सीढी करि ४८७
ताकी नारी प्यारी प्रभु ४५७
ताको अनुभाव शुभ शंख ७५
ताको तो प्रमान भगवान् १६४
ताको सुत विट्ठल सुदास ३४८
ताते तजि दियौ गेह ३१५
तातें देवौ त्यागि मन ५८५
तामें गई सेवा इन बडोई १९९
तामैं एककण्ठ करि ३३४
तासौं दसगुनी लीजै ६०५
ताहि सुनि-सुनि कोटि ६१२
ताही के प्रताप आप १३४
ताही ठौर बैठ्यो मानो ३०
ताही द्वार सेवा विसतार ३६५
ताही समय नाभाजू १
ताही समैं फैलि गये ५१६
तिया रंग भीनी संग ५७
तिया रहै गर्भवती सती ३५१
तिया सकुचाय कर ५२
तिया सुनि कहै कृष्णरूप ५४
तिया सौं सनेह बिन ५०८
तिया हरि भक्त कहै २५६
तिया हू न भेद जानै ४८७
तियासुत मात मग देखैं २७१
तीरथ करत साधु आये ४३५
तीसरी जु ठौर स्याम ३७३
तुमको जु नांव धरैं ६०९
तुम्हरो भवन और सकै १३८
तुरक अजीज नाम धाम ५४१
तेरी उभै सुता ब्याह ३६५
तेरे जे मनोरथ हैं पूरन १२७
तेरेई नगर माँझ निशि ७७
तेरेई वियोग अन्न-जल ५३६
तेरो छोटो भाई मेरो ५३५
तेली कों जिवायो भैंस ३०४
तोरि ताके टूक किये ३९९
तोही को दिखाई दई २३२

त्रिभुवन छीनि लिये दिये ८७
थार में प्रसाद दियौ ५१२
दई कर पाती बात ६४
दई जाँघ काटि डारि ६१३
दई प्रभु सैन जिनि आवो १०३
दई बेटी ब्याहि कहि २२२
दई मंगवाय वस्तु राखियो ४१९
दई लिखि चीठी जाओ ६२
दई लिखि हारि काशी ३२१
दई लै कै छाप पाप २८९
दई लै जिवाय गाय १३४
दई लै दिकाय देह २२०
दई लै मसाल हाथ ४३३
दई लौंडी संग लोभ ५२६
दई सेवा वाहि और ४१६
दई सो लुटाय जानी ५१३
दक्षिण में रंगनाथ नाम २१२
दयौ पै न याहि दयौ ५३४
दरसन आयो राना रूप २२७
दरसन आवैं लोग नाना २६४
दरसन करि हिये भक्ति २९७
दरसन काज महाराज मान १२३
दरसन दूर राज ५४४
दरसन भयौ जाय पाँय ५६९
दशम शोक सुनि ९८
दशरथ वत मान कियो ३८
दसरथ सुत जानौं सुन्दर ५१८
दातुन के करिवे को ६०८
दारुण वियोग अकुलात ९५
दासकों जु डारी चोट २४४
दासनिको दास अभिमान ७६
दिन दिन प्रति रूख १४४
दिन दिन बढ्यो कछू १२८
दिन हो दिवारी कौ २३३
दिये पट भूषण लै ३५२
दिये वे विडारि धयौ ४१६
दियो चरणामृत लै कियो ११८
दियो छोड़ि तानौ बानौ २७२
दियो वास आश्रम में ३३
दियो सरबसु करि अति १०२
दियो सिलाटूक लैके नाम १९८
दियो सुत विष रानी २०६
दियो सैन भोग आप ३१६
दियो सौंपि भार तब २१३
दियो हाप भारी बात २५९
दियौ कर दाहिनो में ६०५
दियौ गृह त्यागि हरिसेवा ५३१
दियौ दरसन आय साँच ६१३
दियौ पट आधौ फारि २९२
दियौ पत्र हाथ लियो ५२४
दियौ लै बताय घर ४३५
दियौ लै भंडारी कर ३४२
दियौ लै भण्डार खोलि ४६७
दियौ है सुपन प्रभु ४२७
दियौं मैं वृकासुर को ४३१
दिल्ली के बजार में ३४४
दिल्लीपति पातसाह ५१५
दीजै आज्ञा मोहिं सोई ८९
दीजै करामात जगख्यात ५१५
दीपक बराइ जोपै देखै १६७
दीयौ धन घोरा कछू २९६
दीरघ कमाऊ लघु ५३७
दुखी पिता माता देखि २६०
दुरवासा ऋषि सीख ३९
दुष्ट डारयो मारि गरे ९९
दुष्ट सब मारे प्रभु ५४१
दुष्ट सिरमौर भूप लखि ३९१
दुष्टनि समुझि कही कीनी १५२
दूध जितौ होय सो ४२३
दूध बरताई लै मलाई ३६९
दूर ते कबीर देखि २७६
दूर-दूर गांवनि में २८०
दूषण और भूषण हूँ ३३५
दूसरौ अनुज जानौ खाय ५३२
दृष्टि सौं न देखै कही ६०७
देखत विमुख जाय पाँय २११
देखत सरूप सुधि तन ३१८
देखत सिंहासन ते कूदि २८
देखत ही उडि जात २१६
देखत ही ऋषि जल ३२
देखत ही देखत में पीड़ा ३१९
देखि आये शाह दौरि ४३८
देखि उत्साह भूप २५६
देखि कुंज-कुंज लाल ४७९
देखि कै प्रभाव फेरि २७७
देखि तन त्यागे पति २५७
देखि देखि वृन्दावन मन ३२५
देखि द्वार भीर पगदासी १३६
देखि नई बात गात २८९
देखि पति मेरौ और ५७४
देखि पति सासु आदि २०४
देखि प्रीति रीति हम ५८३
देखि बिकलाई प्रभु ७०
देखि भई आखें दीन २६७
देखि भई मतवारी ३४५
देखि भक्तिभाव चाव भयो १७९
देखि रिझावर रीझि ३४४
देखि लीनी वेई काहू १३६
देखि सो प्रसाद बड़ौ ३१६
देखि सो सचाई सुखदाई १४३
देखिके मगन भयो लयो १८९
देखिकै प्रसन्न भयौ २९५
देखिकै लजानौं कहा कियौं १९५
देखिकै विकलताई सदा ४२
देखिकै विभुति सुख ५४
देखियौ निहारिकै विचार ४८१
देखिवे कौं चाहै नीकै ५१५
देखी दिन तीनि फेरि ४६
देखी नृप प्रीति रीति ५९१
देखी पोथी बाँच नाम ५१२
देखे चहुँदिशि गाडी कहुँ २४४
देखे नभ भूमि द्वार ११२
देखे भेषधारी दस बीस ६००
देखे रास मण्डल में ३७६
देखे सब भोग मैं न ५८९
देखे सेतबार जानी कृपा २२८
देखै फिरि फिरि पाछैं २५४
देखै महतारी मग बेटा २२०
देखै हाँफै घोरो अहो २३२
देखैं आइ नाहीं प्रभु १८८
देखैं जो नुहार माला २३७
देखैं नहिं मुख मेरो २६८
देखैं राम कैसो कहि ५१६
देखो श्याम आयो मित्र ५५
देखौ बढवारि जाहि ६
देखौ साधुताई धरी शीश २२२
देख्यो एक सर खग रह्यो १०३
देख्यो जब कष्ट तन ३५१
देख्यो बादशाह भाव २७९
देख्यो मुख चाहौं लाल ७०
देख्योई चहति तऊ कहति ५४६
देख्यौ मृदु हास कोटि १३१
देख्यौ हूँ प्रभाव ऐपै ४७७
देख्यौं मैं विचारि हरिरूप ५४८
देत हुते चौका दोऊ ५३०
देबौ गुण लियौ नीके ३२०
देवधुनी तीर सो कुटीर ११५
देवधुनी सोत हो अठारै १६३
देवी अपमान ते न ६६
देवी के पुजायवे कौं ४७३
देवी कों प्रसन्न करैं ४०४
देवीको स्थान काहू ३३८
देवे की प्रतिज्ञा करो ९०
देवौ गिरिधारीलाल जौ ४७२
देवौ प्रभु सेवा माँगे ४१५
देवौ मोकौं तातौ करि ५३७
दैकैं बहु भाँति सो १५५
दोऊ तिया पति देखैं २९१
दोऊ तुम भाई करौ ३१३
दोऊ मिलि सोवैं रितु ६०८
दोहा लिखि दीनौ अकबर ५०१
दौरयौ सुख पाइ चाइ ६६
दौरिकै निशंक लियो ६१
दौरे नर ताही समै ५९९
द्यौसा एक गाँव तहाँ ११७
द्रव्य तौ न चाहौं ३५३
द्रौपदी सती की बात ७१
द्वादश प्रसिद्ध भक्तराज २०
द्वादश बरष माँझ भयो १२७
द्वादश सुशोक लिखि दीजे १४९
द्वादशी की आधी रात २४३
द्वार पै रह्यौ न ४८
द्वार मैं न जान देत २८३
द्वारका के नाथ जब ७१
द्वारका कौ संग सुनि ५३६
द्वारावतीनाथ देखौं ४८२
द्वारिका के ढिंग ही २४२
द्विज कहै नाहीं कैसे २३९
द्विज लखि गायनि में ३०८
द्विजन बुलाई कही यही १४८
धन के जतन फिरे २१२
धनको पठावै पिता ऐ ३२७
धनहू बताओ खोदि ३४७
धनाकौ दयाल ह्वै कै ३०८
धनु पद मांहि १९
धरनौ दे रहे कहे नृप ४६४
धरयौ पितु मातु नाम २३
धरयौ पै न पीयैं अरयो १३३
धरि लई सीस देऊँ संग १३५
धरी दोऊ मन्दिर में १४८
धरीही पिटारी फूल माला १२२
धरे सब जाय प्रभु सुकर १६४
धरे हैं रुपैया ढेर ४३७
धयौ जलपात्र एक ५६९
धयौ जानराय नाम जानि ५७०

धाम धन वाम सुत ४१
धाम पधराय सुख पायकै ५६४
धारी उर प्यारी ५
धारी उर माल भाल ४५९
धारौ उर और सिरमौर ४४५
धुनि तेरे कान परै २४०
धूम परी गाँव झूमि ५४९
धोवौ हाथ बैठौ आप ५३०
नट्यौ सतबार जब कही ६०७
नदी चढी रही भारी १६५
नयौ मँगवाय तन छ्वाय ४८५
नरवरपुर ताकौ राजा ६०१
नरसी कही ही भलै ४४८
नरसी बरात मत जानौं ४५४
नरसी सौं कहें गहें ४५३
नवलकिशोर कभूँ नन्द ५४२
नाचत बजावत ये चलीं ४४४
नाना भेंट आवैं हित ४८४
नाना भोग राग करैं ३७५
नाना विधि पाक धरैं ३२५
नानाविधि पाक सामा ५४६
नानाविधि पाक होत ५७४
नानाविधि रागभोग ५४५
नाभा जू कौ अभिलाष ६३३
नाभा जू बखान कियौ ५७५
नाम दीपकुंवरि सो बड़ी ६२२
नाम धरि रास औ ३७६
नाम हो कल्यानसिंह जात ५२५
नामदेव हारे हरिदेव कही ४०३
नामा की तो बात १८०
नारायणदास सुखरासि ६३३
नारायन बड़े महा अहो ४४७
नारि सों कह्यो है १७१
नाहर जू पींजरा में ५५५
निकट बरेली गाँव तामें २४८
निकसत द्वार जब देख्यौ ५९४
निकसत धाय चाय पग ११६
निकसत पूछैं अहो कहाँ १८१
निकसी झमकि द्वार २५०
निकसी पुरान बात करै ४९४
निकसे पदम आय पूछी ३११
निकसे बाजार ह्वै कै २७६
निकसे विचारे कहूँ दीजै ४२९
निकस्यौ विपिन आनि ६१
नित ही लड़ावैं भाव ३९८
नितही विचारे पुनि २५८
नितहीं चलत ऐपै चलन २०५
निपट अकेली देखि ४१७
निपट अधीन गाँव केतिक ३९१
निपट अधीन दीन भाषि २४७
निपट अमोलपट हिये ३४०
निपट निकट वास धौरहा ५२५
निपट बिचारी बुरी देत १६०
निपट मगन किये नाना ६१०
निपट विकट भाव होत ३६४
निम्बादित्य नाम जाते १०६
निरखि निहाल भयौ ४७९
निशि दिन ध्यान तजे २५७
निष्ठा रिझवार रीति ६०८
निसि को सुपन माँझ ५२०
निसि दिन गान रस ३६६
निसिदिन लग्यौ पग्यौ १८९
निसिदिन सुन्यौ करै ५४४
नीके अन्हवाय पट ३४५
नीचे मान मन्दिर सो ४८६
नीठ नीठ नाम दियौ ३१२
नीठि-नीठि ल्याये हरि ६१५
नीर भरि घट सीस ४९१
नीलाचल धाम तहाँ लीला १९२
नीलाचल धाम तामें १४८
नूपुर सो टूटि छूटि ३७१
नूपुरनि बाँधि नाचि ४५६
नृत्य करि गाई रीझि ६०५
नृत्य गान तान भावभरि ३४५
नृप अन्न त्यागि दियौ ५५२
नृप न प्रतीति करै २२५
नृप समझाय राख्यौ देश ५५४
नृप सो मलेछ बोलि १३४
नृपति जयसिंह जू सौं ६२२
नृपति बुलाइ कही हिये १५५
नृपति समाज मैं ३८६
नृपति सिखायौ जाय ४४६
नृपसुत भक्त बडो अबलौं १२०
नृपहू सुनत अब लागि ४७
नेकु आप चलौ उह ५५९
नेकु ध्यान कियौ तब ५५८
नेकु मन आई सुखदाई ३५९
नेकु सावधान ह्वैकै ६०९
नेह भरि भारी देह ४२५
नेह सरसाई लै दिखाई ३४३
नौका पठवाई द्वार लाव १६८
नौबत बजाई द्वार ५५३
न्हाइबे को मग झारि ३१
न्हाइवे की बाट निशि ३४
न्हात ही विदुर नारि ५१
पंचरस रस सोई ५
पंडित समाज बडे-बडे १६४
पकि रहे आँब माँगे २४९
पकि रह्यौ खेत सन्त ४९६
पट्टा दूना-दून पावौ २२६
पट्टा युगलाख खात सेवा २२४
पढे सब ग्रन्थ संग ५२४
पण्डित प्रबल दिग बिजै ३२१
पति को निहोरो ताते ९३
पति को बुलाइ कही ४९०
पति को सुनाई भई ४८७
पतित पावन नाम २६६
पद लै बनायौ भक्तिरूप ४९९
पन्थ को छुटाय चहैं २५३
परदा न सन्त सौं है ६०८
परयो द्विज दुखी निज १९०
परयो नीर कूदि नेकु ३०
परयो बडो सोर दृग १७०
परयो सोच भारी दुःख १४१
परयो सोच भारी नृप १४९
परयौ सोचभारी कहा ५९
परवत कन्दरा में दरसन ११९
परसि पिछाने लपटाने ९६
पराचीनबर्हि आदि कथा ७४
परे कूदि नीर कछु सुधि १६६
पर्यो कोऊ काम आय ६०१
पर्यौ बधू पाँय तेरी २२१
पर्यौ सोच भारी गिरिधारी ३४६
पर्यौ अति मेह देह ६१४
पर्यौ सोच भारी कहा ५८५
पर्यौ सोच भारी तब ६०२
पर्यौ सोच भारी मेरी ४३०
पर्यौई अकाल बेटा-बेटी ५७३
पल्यो साधु सीथ सौं २०८
पहिले जु खाय बनमांझ ४१४
पहुँचत भाष्यो जाइ ८८
पहुँची पुकार रामानन्दजू २६९
पहुँची भवन सासु देवी ४७२
पहुँचे नृपति पास आदर ५१५
पहुँचे भवन आइ दई २०३
पहुँचे भवन जाइ चहुँ ७९
पहुँचे वैकुण्ठ जाय ४०
पहुँचे हुजूर भूप खोलिकै ५००
पहुँच्यौ निकट जाय ४२५
पाँइ लपटाय अंग धूरि में ११४
पाँय परि गये लैकै ५६०
पाँय परि माँगि लई ५५४
पाँयनि को धारियो जू ७९
पाँव परछाल कही ४८८
पांय परि आँसू १३
पाक को अबार भई १०६
पाग मधि पाती छबिमाती ६३
पाछिले कवित्त माँझ दुहुँन १९९
पाछे साष्टांग करी करी ३८८
पाछे सेन गयौ पंथ ३०९
पाछे हनुमान आये बोले ५१०
पाछें आये लोग शोक ५७९
पाण्डवन मध्य मुख्य ७५
पातर समेटि लई सीत ३७२
पातरि उठाय श्रीगुसाईं ३८६
पाती लैके चल्यो विप्र ४३
पात्र और अपात्र यों ४६५
पाथर लै दियो अति ३०६
पानी सौं न काज ५६६
पायो पकवान वन मध्य २३३
पायो लै प्रसाद स्वाद कहि ११३
पायो हम सब अब २१८
पारषद मुख्य कहे २५
पारस पषान करि जल ३६७
पार्वती पूछें किये २२
पालकी बिठाइ लिये १५४
पावै आशै कौन हृदय ४६६
पावै जो प्रसाद तब जीभ १०४
पावैं प्रभु जब तब ३९९
पावैं प्रभु सुख हम २१३
पिता को सराध नेकु १६५
पिता गृह त्यागि आइ १७८
पिता घर आयो पति ८५
पिता सौं पठाई कहि ४३८
पितासों निशंक ह्वै कै ४३
पीयो सुख दीयो जब १३३
पीवौ जल कही आबखाने ५९८
पुर ढिंग कूप तहाँ ५२३
पुर ढिंग चारो ओर ४६५
पुर में फिरत उभै ४४२
पुरुष विशेष पदकमल १९
पूँछे ते कही है बालमीकि ८२
पूछि पूछि आये तहाँ ३६
पूछिकै पठाय दियौ वानै २३२
पूछिबेकों फेरि गये करौ ३१४

पूछी अजू कहा कियौ ४०२
पूछी कही कोढी एक ३८५
पूछी चले कहाँ कही २३६
पूछी तुम कौन काके २५१
पूछी प्रभु भयो कहा १९७
पूछी वा खवासिन सौं ५४७
पूछे ते बतायो खम्भ ९९
पूछे नृप बोले कासों कैसे १२१
पूछे भक्त भूप ठौर ९८
पूछे भूप लोग कह्यौ ५५३
पूछैं आनि लोग कौने १३८
पूछैं कहौ बात ए २९२
पूछैं नृप कहौ अहो ४७०
पूछैं नृप नर कोऊ १५६
पूछैं पिता-माता पट ४७१
पूछैं बार-बार सीस १५७
पूछौ मत बात सुख ५४३
पूछ्यो भूप तियासौं जू २०६
पूछ्यो सो जनायौ ढूंढि ३२५
पूछ्यो हरि पायबे कौ २८३
पूनौं में प्रकास भयौ ४८९
पूरब जनम कोऊ मेरे ४५
पूरबमें ओकसो तिलोक ४०६
पृथीपति आनिकै मुहीम ५३९
पृथ्वीपति आयौ वृन्दावन ५९३
पृथ्वीपति सम्पति लै ५००
पृथ्वीराज अंग के अँगोछा ४८५
पृथ्वीराज राजा चल्यौ ४८१
पैयत न पार तन हारि १६६
पोथी की तो बात १५२
पोथी को प्रताप स्वर्ग १५१
पोथी तुम बाँचौ हिये ५११
प्याइबे की आस करि १३१
प्यार को विचारै न ४८९
प्रगट दिखायो रूप सुन्दर २३७
प्रगट प्रभाव देखि जान्यो १०६
प्रगट लै कियो रूप ३६१
प्रगट्यौ सरूप निज ३०१
प्रतिमाको फारि बिकरारि ४०४
प्रथम जनम माँझ बड़ौ ५३५
प्रथम निरखि नाम हरखि ५८२
प्रभु की टहल निज ५३०
प्रभु जू स्वप्न दियौ ४२२
प्रभु ने परीक्षा लई २२३
प्रभु पधराये नाम लाल ६१५
प्रभु पहिराय कह्यौ गाय ४४६
प्रभु पै बचाय लीजै २७९
प्रभु लै जिंवाय राँड ४६१
प्रभु सों सचाई जग २६
प्रभु ही जनाई मन १५०
प्रसाद की अवज्ञा तैं १९३
प्रह्लाद आदि भक्त गये ६०४
प्रात भये चलै नाहिं ३०२
प्रात भये भूखे हरि ६१६
प्राननि कौं आगे धरौ ५२९
प्रिया अति गति लई ३७१
प्रीति की न रीति १५९
प्रीति की सचाई यह ४९७
प्रीति रस रास सों २६५
प्रीति रसरूप भई ४९
प्रीति हरिदासनसौं विविध ३८२
प्रेम की सचाई ताकी ५९२
प्रेम को विचार आपु ५२
प्रेम में न नेम हेम ५४९
प्रेम रसरास कृष्णदास ३४४
प्रेम ही की बात इहाँ ५१९
प्रेमकी जू बात क्यों हूँ ९६
प्रेमनिधि नाम करैं सेवा ५९४
प्रेमसिंह सुत ताही काल ५५०
प्रेरि दिये ह्वदै जाय २६५
फट्यौ पट देखि नृप १५०
फाटि गई भूमि सब १५७
फाटि जाय भूमि तौ ५२७
फिरत चौडोल चढे ३२३
फिरे दुख पाइ जाइ कही १०३
फियौ आस पास भूमि ४१८
फूले देखौ कंज तब १६३
फेंट ते निकासी ताल १४३
फेर मारी लात अरे ५९८
फेरि कैसे आये सुनि ३१०
फेरि चाह भई दई ५३१
फेरि जिनि ऐसी करौ ३५९
फेरि नृप डौंडी सुनि ८४
फेरि मिलि माधै जू ३२१
फेरि सुधि आई देखि ६११
फेरिकै पठायो सुख ४४
फेरिकै बुलायौ करौ ३४८
फेरी नृप डौंडी यह १५१
फेरी पुर डौंडी ताके २२०
फैलि गई गाँव वाकौ ५०४
फोरैं कोट मारैं चोट ५१६
बंसी पहिराई द्विज भक्ति ३७०
बजत मृदंग मुंहचंग ४३२
बड़ी ए गरज चले ५६७
बडी कृपा करी आज ८९
बडी तू अभागी बात १८५
बडी ये लडाई लीन्ही ३८
बड़े अनुरागी ये तौ ३५७
बड़े आप धीर रहे ठाढे ३६०
बड़े आय कही चलौ ५३३
बड़े के अधीन रहै ५३२
बड़े गुरु सिद्ध जग ५८०
बड़े बड़भागी अनुरागी ६२८
बडे भक्तिमान निशिदिन ८
बडे सिद्ध जल १२
बडेई असंग वे मतंग ३२
बड़ेई खिलारी वे रहे २६४
बडेई दयाल सदा दीन ४१
बडेई दयाल सदा भक्त २२८
बडेई प्रभाववान सकै १५४
बड़ेई रैदास हरि दासनि २६१
बड़ेई विरक्त अनुरक्त रूप ३८३
बड़े-बड़े दण्डी और ४४३
बड़ो गुरुनिष्ठ कछु २५८
बडो निसकाम सेर ५३
बड़ोई अकाल पयौ जीव ३०५
बडोई प्रभाव देख्यो तैसे २४७
बड़ोई समाज होते मानों ३५२
बड़ौ अपराध मानि साधु ३८७
बड़ौ त्रास भयौ नृप ४५६
बड़ौ भागवत विप्र ४६८
बड़ौ मूढ राजा मोजा ३००
बढत सुहाग याके पूजे ४७३
बढै दिन दिन चाव ५०
बधिक बुलाय कही वेग २१६
बधिकनि जानी जासों २१८
बधू अति लाज भई ५०८
बन बन खेले बिन ४१२
बरखा सु रितु जित ५९४
बरजत आयौ भूप जायके ५९१
बरष हजार दश २२
बरष हजार बीते भये १०४
बरषा न भई सब ५६३
बरस पचास लगि विषै ५८९
बलिबन्ध नाम प्रभु बाँधे २४५
बल्लभजू नाम लियो पृथु १८७
बसत चित्तौर मांझ २६६
बसत निवाई ग्राम स्याम ४९७
बस्यौ उर स्याम अभिराम ५८४
बहु सुख पाये पाये ४९२
बहै दृग नीर कहै ५०४
बहै दृग नीर देखि ३९१
बाँचि आँच लागी मैं ६५
बाँधिकै जंजीर गंगानीर २७८
बाँधे जसुमति सुनि औरै १९२
बांधि नीकी भांति पौढि ४१८
बांधौगढ बास हरि ३०९
बागमें समाज सन्त चले ३८७
बात सुनी रानी और ५०
बानी सुनि जानी चले ४०५
बाप महतारी मेरे कोऊ १८१
बापी पधराय हाँकि जाय २४३
बार बार कहैं नामदेव १२९
बार बार पांव परै ३०७
बार बार पीवो कहूँ १३२
बार-बार कहै कहा ५४३
बारमुखी लई संग मानौ २७४
बालक न होय यह ४३१
बालक निहारि जानी विष २११
बालद लै धारे दिन २७१
बाहर निकासि मानो १५३
बाहिरी टहल पात्र ४६
बितये बरस जब सरस २८४
बिनस्यो ब्रह्मत्व कही श्रुति १७९
बिना प्रभु आगें नृत्य ५६२
बिनु हरिभक्ति सब जगत ११७
बिनै बहु करी करी ३३६
बिन्ध्याचल तिया सी न ८७
बिपिन पधारे आप जाय ३७६
बीछू कटवावौ कोटि साँप ६३४
बीत जात जाम तन ५८४
बीतत बरस मास आवै ५७६
बीति गई राति प्रात १६९
बीते कैयो याम तब २४०
बीते जाम चारि मरि १४२
बीते दिन कोऊ नृप ६०३
बीते दिन तीन चार ३९३
बीते दिन तीन जानी ४१८
बीते दिन तीन धन २९५
बीते दिन तीन प्रभु ५३८
बीते दिन तीन वा ५८७
बीते दिन तीनि अन्न १८५
बीते दिन दोय निसि ४८२
बीते दिन बीस तीस ४६७
बीते दिन सात शिव ४३०

बीन लै बजाई गाई १६९
बीन लै बजावै गावै ४८
बीनै तानौ बानौ हिये २७०
बुद्धिके प्रमान उनमानि ३८३
बुरहानपुर ढिंग बाग ६१४
बूड़त ही आगे भूमि ५३४
बेई गुरु करौ जाय ४५९
बेचिकै बजार यों रुपैया ३४१
बेटी अति प्यारी प्रीति ४७२
बेटी एक क्वाँरी ब्याहि ४२७
बेटी कौ विवाह घर ६२५
बेटी चारि सन्तनि कौ ५७८
बैजयंती दाम भाववती ५
बैठी ढिग आइ केरा ५१
बैठी नृपसभा जहाँ २७५
बैठे कृष्ण रुक्मिनी महल २३६
बैठे जब भोजन कौं ५३४
बैठे ढिंग आय बोले ३३३
बैठे दोऊ जन कोऊ १७६
बैठे निशि चौकी देत ३२
बैठे पिछवारे जाइ कीनी १३७
बैठे भौन कौन देखि ४५७
बैठे मधुपुरी कील्ह मानसिंह १२१
बैठे ये प्रसाद लेत लेत ३२२
बैठे रस भीजे दोऊ ४८९
बैठे वन मध्य जाइ १७३
बैठे सुख पाइ फल ३६
बैठे हे गुफा में देखि ६१३
बैठे हैं कुटी में पीठ ३१६
बैठो याही ठौर करो ३९६
बैठ्यो लै इकान्त सुत ६५
बैठ्यौ कुण्ड तीर जाय ४११
बोलि उठी तिया अरधंगी ९०
बोलि उठे ढूंढि हारे ४३७
बोलि उठे सबै तेरी ५८
बोलि उठ्यो एक एहि २४४
बोलि उठ्यौ कोऊ यों ४२४
बोलि उठ्यौ विप्र एक ४४५
बोलि नीच जाति बात ६५
बोलि लियौ सन्त सुता २२२
बोलिकै कुटुम्ब कही ५१४
बोलिकै पठाये महाजन ५६१
बोलिकै सुनाई अहो कहा ४१४
बोलिकै सुनाई साष पूजी २४१
बोलिकै सुनावैं इहां ३५६
बोलिबो जौ चाहौं तौ २०२
बोली अकुलाय एक जीवे २०९
बोली अकुलाय मन ४४
बोली कर जोरी मेरो १४६
बोली कही साँच बिन ५८८
बोली घरबार पट सम्पति ६२७
बोली जू बिकायौ माथौ ४७३
बोली भक्तबधू अजू वे १६०
बोली मुसुकाय वे टहलुवा १८४
बोली मोसौं बोलौ जिन ४५८
बोली वह सांच वही ४०५
बोली सरस्वती मेरे ईस ३३६
बोले अकुलाय तोहि ५९
बोले आप चिन्ता जिनि ६१९
बोले आप बैठिये जू ५२६
बोले आप याकों २५२
बोले आप लै पधारौ ५२९
बोले कृष्णदेव याको सुनो ७६
बोले जू निशंक जावौ ४६७
बोले द्विज बालकी सों १४६
बोले नेकु रहौ मै ४६२
बोले पट खोलि दिये ४४८
बोले प्रभु कहीं यों ४२६
बोले प्रभु वेई आवैं १०८
बोले बीच राम तऊ २५३
बोले भरि भाय तेरौ २४२
बोले मुसुकाय विप्र क्षिप्र १४८
बोले रह्यौ नीर में ४८३
बोले रीझि श्याम ५२
बोले वर माँग अजू ४३०
बोले विष्णुपुरी पुरी काशी १७७
बोलै यों सुहागवती मयौ ५१४
बोलो राधाबल्लभ औ लेवौ ४१९
बोलौ हरे कृष्ण कृष्ण ३९०
बोल्यो अकुलाय जाय ८२
बोल्यो अकुलाय मैं तौ २२१
बोल्यो अब पाऊँ कहाँ ९६
बोल्यो करजोरि याको ११
बोल्यो घरदासी सो तूँ १८३
बोल्यो छोटो विप्र छिप्र २३९
बोल्यो नृप अजु मोहि १६२
बोल्यो नृप सभा मध्य ३४८
बोल्यो बनिजारो दाम २९७
बोल्यो भक्तराज तुम बडो ९२
बोल्यो विषै लागि कोटि ५५४
बोल्यो सुखपाय अजू साँवरो २३२
बोल्यौ अकुलाय अजू ४२१
बोल्यौ अजू मेरौ काहू ५१९
बोल्यौ एक नाम साधु ३०२
बोल्यौ कोऊ जन धाम ५९०
बोल्यौ जूती बाँधौ कान ३२१
बोल्यौ नृपराज धन ५५७
बोल्यौ प्रभु भूखें रहे ६१६
बोल्यौ बड़ौ भ्राता अब ५५८
बोल्यौ मुरझाय मैं तौ २२२
बोल्यौ याहि राखौ सब ५९७
ब्याह करि आये भक्तिभाव ४५५
ब्याही ही विमुख घर २०१
ब्रज ही की लीला सब ३२२
ब्रजजन प्रान कान्ह बात ६३४
ब्रह्मा शिव कही यह ४०
ब्राह्मन कौ रूप धरि २७४
भई आँखि राती लागी २००
भई उतकण्ठा भारी आये १७४
भई एकादशी अन्न माँगत १४२
भई तब छाया श्याम १४७
भई द्वार भीर नर ५६९
भई द्विजसभा कहि ५११
भई नभ बानी तुम १८५
भई नभ बानी देह २६८
भई नभ बानी रामानन्द २६०
भई बढवार राग भोग ४७
भई बढवारि ताकौ १३
भई भक्ति रासि बोले २५५
भई यों अवार देखैं १९६
भई यों प्रसिद्ध बात ३१७
भई रीझि भारी सब ४०७
भई लाज भारी पुनि १६१
भई लाज भारी विषै ६१०
भई सभा भारी पूछ्यो २३९
भई सुधि आपकौं जु १६१
भईं तब आखैं दुखसागर ५१६
भए दिन तीन ए तो ३१६
भए शिष्य जान आप ३७८
भए शिष्य जाय आप ३०८
भए सिरमौर एक एक ३३२
भक्त इष्ट सुन्यौ मेरे ४२१
भक्त कर जोरिकैं बचायौ २२६
भक्त निसकाम कभूँ ४२
भक्त नृप एक सुता २०८
भक्त बूड़ि गयो यह २८८
भक्तन की सेवा सो १८२
भक्तन के हित सुत २०५
भक्तनि की सुधि करी ३७०
भक्तनि के संग भगवान् २३५
भक्ति के अधीन सब ४९७
भक्ति के प्रसंग कौ ४६७
भक्ति को प्रताप ऋषि ३३
भक्ति को बढावै १७
भक्ति कौ प्रभाव यामें ५७९
भक्ति छवि भार ५
भक्ति जो विभीषण २८
भक्ति महारानी कौ ३
भक्ति रस रूप ९
भक्ति विसतार कियौ ४९२
भक्ति विसवास जाके ६३३
भक्ति ही प्रचार पाछे १२६
भक्तितरु पौधा ताहि ६
भक्तिरसबोधिनी सो टीका ६३२
भक्तिवश श्याम जैसैं २०४
भगवानदास उर भक्ति ६२०
भज्यौ धन लैके कोऊ ४९४
भट्ट श्रीनारायन जू भये ३५६
भये इकठौरे माया कीने १११
भये उभै शिष्य नामदेव १८०
भये गुंजामाली गुंजाहार ४१५
भये चारि भाई करैं २३०
भये द्विज पंच इकठौरे ६२३
भये पुत्र तीन तामें १७९
भये बिन भोर बधू २०६
भये भील संग भील ७४
भये शिष्य शाखा अभिलाषा ५७२
भये सब साधु व्याधि ५१४
भये सुत तीन बांट ३७३
भये सो अमीन यों ४९८
भये हैं जुड़ाये कोऊ ३४२
भयो एक ग्वाल साधुसेवा २३३
भयो एक भूप ताके २०५
भयो जू प्रगट गीत १४७
भयो जू प्रगट बाल नाम १२८
भयो जू विचार काशीपुरी १६४
भयो जू सबारो फिरि १३२
भयो तदाकार यों निहार ६०
भयो तन वृद्ध तऊँ १६३
भयो दुःख भारी सुधी २५७
भयो बोझ भारी किहूँ ३२९
भयो ब्रह्मभोज कोई ५८
भयो मुख स्वेत रानी १६१
भयो शोक भारी हमें २१५
भयोई खिसानौ राना ४७७

भयौ उपदेस भक्ति देस ६१९
भयौ कोप भार थार ४१४
भयौ गजराज भक्तराज ३९२
भयौ जब भोर पुर ४८४
भयौ जै-जैकार नृप ४४९
भयौ ज्वर नाड़ी छीन ५७८
भयौ दरसन तुम्हैं मन ३३६
भयौ दुखरासि कहाँ पैयै ५०७
भयौ हौ बिरक्त कोऊ ४२०
भरत दधीचि आदि भागवत ८६
भरि अँकवारि मिले मन्दिर २१५
भरो है भण्डार धन २५१
भयौ ही हुंकारौ प्रभु ५३३
भवन प्रवेस कियौ मन्त्री ५५५
भाँवरैं परत मन साँवरे ४७१
भाई उभैं माथुर सुराना ३४८
भागवत गान रसखान सो ३७९
भागवत गावै भक्तभूप ४६६
भागवत संत रसवंत कोऊ ७६
भागवत-टीका करी श्रीधर २३४
भाज्यो दिशा दिशा ४०
भाव की बढनि दृग ५९२
भाव ही सौं जाने ५५६
भावना सचाई वही ५५६
भीजि गये साधु नेह ५४९
भीजि गयौ हियौ दास ३१०
भीज्यो अनुराग पुनि ३४१
भीतर बुलाये श्रीगुसाईं ४९९
भीलन को राजा गुह ९५
भुपति विमुख झूठ ४५६
भूख को जतावैं बानी ३७२
भूख निसि भई भक्ति ३३८
भूखे को न देखि सकैं ९४
भूप को सलाम कियौ ५५०
भूप कौं खबरि भई ५५७
भूप मन आई यह ३००
भूप सुनि आगे आय ४६४
भूप सुनि आयौ उपदेस ४९५
भूप सुनि चौंक परयो १३५
भूपके विवाह सुता जोरौ ४०६
भूपको सलाम कियो ४०७
भूपति सुनत बात अति ५५३
भूपबहु भेंट करी देह ३४९
भूमि पर सांष्टांग करी ५५७
भूमि परि विनै करी ६२१
भूयो जू विवाह उत्साह ४५
भोग की न चाह ऐसे ५७
भोग जे लगाये मैं ४१२
भोग लै लगावैं नाना ४९४
भोगको लगावै प्रभु २५९
भोजन करत मांझ पीपा २९८
भोजन कराय दिन पाँच ५८१
भोजन कराये भरि २५५
भोजन निवारि तिया आइ ७१
भोर आय पूछैं अजू ५१३
भोर जौ विचारै नहिं ५२०
भोर भये शोर पयौ ५८६
भोर भयें गाड़ी भैंसि ४२३
भोर ही पधारौ अब ८०
भोरही महोछौ कियौ जोई ४०८
भौन ते निकासि धाये ५५६
मंगलीक जम्बूफल फल १७
मग अवलोकि उत परयो १११
मग ठग मिले द्विज २५३
मगह में जाय भक्ति २८१
मणिमय ही साज-बाज ४५२
मति उनमान कह्यौ लह्यौ ६३१
मथुराते कही चलौ बेनी ३५६
मदनगोपालजू कौ दरसन ५१८
मदनमोहन जू हैं इष्ट ५०२
मधुकर शाह भूप भयो ४१७
मधुकरशाह नाम कियौ ४८८
मन ही मतंग १५
मनन सुनीर अन्हवाइ ३
मन्दिर अघारि देखैं परो २४३
मन्दिर उँजारौ भयौ हिये ३२०
मन्दिर करायौ प्रभुरूप ४८४
मन्दिर सरावगी कौं प्रतिमा २१३
मन्दिरके द्वार रूप सुन्दर ३२७
मरम न जान्यो निशि २५६
मरयो एक भाई वाकौ १५९
मर्यौ लाज भार चाहै २९९
महल महल माँझ २८८
महाजन सुनो सदाव्रती २१९
महाप्रभु कृष्ण चैतन्यजू ३७९
महाप्रभु कृष्ण चैतन्यजूकी ३९८
महाप्रभु कृष्णचैतन्य १
महाप्रभु कृष्णचैतन्यजू की ३२८
महाप्रभु पारषद थानेश्वरी ३७८
महिमा अपार देखि भूप ८४
माँगत फिरत हुती जुवती ५२५
माँगि लीजै वर कही ५१०
माँगे बार बार विदा १५५
माँगौ वर कोटि चोट ९२
माँग्यौ नेकु पानी ल्यावौ ५६५
माटी दूर करी सब ५६९
माता करै सोर कोऊ २७१
माता कहै टेरि करि १३०
माता दूध प्यावे याकों २६०
माता मग चाहै बड़ी ४१३
माता मन्दालसा की बडी ९३
माता हरिभक्ति भूप कही ४४६
माधौदास द्विज निज ३१५
मानस पठायौ दिन आयौ ४५३
मानसिंह राजा ताकौ ५४२
मानसी विचार ही अहार ३८३
मानसी विचारें लाल ४८७
मानसी स्वरूप में १०
मानसीमें पायो दूध भात ३२८
मानि अपराध साधु धक्का ४१०
मानि आनि प्रान लोभ ६२०
मानि प्रिय बात गहगह्यौ ३६५
मानि मत सार प्रभु २१७
मानि राजात्रास दुखरासि २२८
मानि लई बात नई २६४
मानि लीन्हो बोल वे ६०
मानि साँच बात जाति ८२
मानिकै प्रताप चिन्तामनि १७५
मानुस पठाये सुधि ल्याये १२१
मानो एक तन भयो ५५
मानौ आगि आँचि लागी ३६०
मानौ जिनि संक काज २९९
मामा रह्यो भीतर औ २१४
मार मार करि कर खड्ग १९१
मारग में जाइ रहै ३५
मारबाड़ देस तैं ४२५
मारवार देश बीकानेर ५३८
मारिवौ कलंक हू न ५५५
मारी जांघ छुरी लखि ४१७
मारौ याहि काल दुष्ट १९१
मालाधारी दास मानि ४६५
मालाधारी साधु तनु ११०
मिलि गये वाही ठौर ३७७
मिलीं उभै सुता रंग ४४३
मिले भरि अँक लै ४५५
मिले मुतसद्दी शिष्य ३८९
मिले राम कृष्ण झिले १०१
मिले श्रीगुसाँईं जू सौं ५२४
मिल्यो मग सिंह यहि ९०
मिल्यौ एक संग संग ३९५
मीन बिन्दु रामचन्द्र १८
मुख न दिखावै याहि ४५८
मुखहूँ न देखैं वाको ५०५
मुद्रा सत पाँच मोल ४९०
मुद्रिका उघारी औ निहारि ९३
मुनि मन माँझ क्यों ९७
मुरली मधुर सुर राख्यो १७५
मुहरनि पात्र भरि लै २५०
मुहरनि भांड़ो भूमि २९४
मूठ लै चलाई भक्ति ५६०
मृगी पाछे परे करे २२४
मेरतें बसत भूप भक्ति ४८६
मेरतै प्रथम वास जैमल २३१
मेरतौ जनम भूमि झूमि ४७१
मेरी सम सोनो लेहु २४४
मेरे अश्रुपात क्यों न ५२८
मेरे धन राम कछु २६२
मेरेऊ न संत बिनु ४१
मेरो एक भक्त आहि ८८
मेरौ है इको सौ वास ४३७
मैं जु दीनौ हाथ ६०६
मैं तो भये भोर १६८
मैं तो हौं अधीन तीनि ४०
मैं तौ हौं अधीन तेरे १८५
मैं हूँ जल त्यागि ४५८
मोको अति प्यारे साधु ४१
मोको परयो सोच यज्ञ ७८
मोपै तौ दियो न जाय ९२
मोसौं न पिछौंनि दिन १३३
मोहन न्यौछावर मैं भयौ ३५४
म्हारो कहा जाय आय ४४७
यही अब दण्ड राज २२९
यही एक पद मुख १४७
यही नित करौं नहीं ४९२
यही बात परी कान ६२७
यहू दूर डारौ करौ २८६
याकौ तातपर्य्य सन्त ५८०
याते नहीं खात वाकी १११
याही के प्रभाव भाव ८४
याही विधि नाना भांति ३२६
युगल सरूप अवलोकि ३७७
ये तौ प्रभु पाय चुके ४००
ये तौ प्रभु रीझे तोपै ३९५
ये तौ सब गौर तनी ३३०
योगी यती तपी तासों २६

योगेश्वर आदि रस स्वाद ७३
रंगीराय नाम ताकी ३५३
रचिकै चिता को विप्र १४३
रचिकै सिंहासन पै लै २९
रची कविताई सुखदाई २
रजनी के शेष ऋषि ३१
रजनी के शेष पति ४६
रजनी के शेष में २६८
रतन अपार सारसागर २७
रवकि उठाइ लई ३६
रसिक जैदेव नाम मेरोई १४४
रसिक प्रवीन मग चलत ३७९
रसिक समाज में विराज ६३०
रसिकन मन दुख जानि ३४७
रसिकमुरारि साधुसेवा ३८४
रसिकाई कविताई जाहि ६३०
रहतो गुलाम गयो धर्मराज ११७
रहनि कहनि रूप चहनि ३२८
रहि गई एक काँटो ८३
रहि गई एक भूले ४४१
रहिवै कौ दई ठौर ४४०
रही एक मांझ धयौ ३५७
रही सभा सोचि आप ४८९
रहे कोऊ दिन आज्ञा २८७
रहे कोऊ दिन पुनि ६१७
रहे चुपचाप सबै जानी ४९२
रहे दिन चार पै ४५१
रहे नन्दगांव रूप आये ३५९
रहे नैन मूँदि रघुनाथ ९५
रहे पुनि पावन पै ५६५
रहे विप्र दूषि सुनि ५७६
रहे समुझाय याहि कछु १९९
रहे सुख पाय कृपा २७२
रहे सुख लहे नाना ६२८
रहे सो बरस रस सागर १७०
रहै एक नटी शक्तिरूप ६०४
रहै एक शाह भक्त ६१४
रहै जाके देश सो ६२
रहै तहाँ शाह किये ४४८
रहै भोग शेष और ३१९
रहैं काहू देस में ५२८
रहैं गुरुभाई दोऊ भाई ५८०
रहैं ढिंग गाँव तहाँ ४२४
रहैं भौगांव नांव नरबाहन ४१९
रहैं श्रीसनातन जू नन्दगाँव ३६२
रहौ अजू सेवा करौं १७३
रहौ कौन ठौर सिरमौर ५२३
रहौ द्वार झायौ करौ ५७४
रहौ मैं खिरक मांझ ३६१
रह्यो कैसैं जाय अकुलाय २०८
रह्यौ उतसाह उर दाह ६२८
रह्यौ बैठि जाय जूती ४९९
राँका पति बाँका तिया ४०१
रांपी एक सोनो कियो २६२
राआ मुख भयो सेत ३४९
राखे हम हितु जानि १५६
राखौ यह खग पगि ४७०
राग सुनि भक्तिनी को ३४४
राजसी महन्त देखि ५२२
राजा अति अर गही १५८
राजा कौ औसेर भई ३०४
राजा कौ दीवान ताके ५८
राजा कौं सुपन दियौ ४९७
राजा चलि आयौ सब ४६३
राजा जिय शोच २७५
राजा झूंठ मानि कह्यौ ४९५
राजा ढिंग आनि करि ८४
राजा भक्तराज डोम २५५
राजा मग चाहि हारि १२३
राजा मानसिंह माधौसिंह ५५८
राजा रिझवार करै देवे ६०४
राजा रीझि पाँव गहे ४६९
राजा लाज मानि मृदु ४२
राजा लैन आयौ ऐपै ३६८
राजा सरबसु दियौ जियौ ४६४
राजा हित ताप भयौ ४६४
राजाके जे लोग सु ३५०
राजैं गिरिधारीलाल ४७६
रात तें ज्यौं प्रात ५८९
राधाकृष्ण रस की ३५७
राधाकृष्ण लीला सौं ३७९
राधातर तीर द्रुम डार ३६३
राधिका वल्लभलाल आज्ञा ३६६
राधिकावल्लभदास प्रगट ५२७
राना की मलीन मति ४८०
राना कै सगाई भई ४७१
राना देशपति लाजै ४७५
राना नै लगायौ चर ४७६
राना सुनि कोप कयौ ४७४
राना सौं सनेह सदा ३५५
राम नाम मन्त्र यही २६९
राम नाम लिखि सीस ३०
रामनाम कहै बेर तीन ३११
रामबिन कामकौन फोरि २७
रामानन्द जू कौ शिष्य २५९
रामायन कथा सो रसायन ५०९
रायसेन गढवास नृप ४५७
रासके समाज में विराज ३७७
रीझि गये सन्त प्रीति २११
रीझि जगदेव सो यों ६०४
रीझी बडो द्विज निज २३८
रीझे प्रभु रहे द्वार भये १०२
रीझे सुनि वानी साँची ६२७
रीझ्यौ नृप देखि रीझि ६२०
रीति हूं उपासनाकी ३५८
रुक्का लिखि डारे दाम ५००
रुक्मांगद बाग शुभ गन्ध ८३
रूप उजियारी चन्द ४३२
रूप की निकाई भूप ४७९
रूप कौं निहारि मन ५७०
रूप गुण गान होत कान ३६०
रूप गुन भरि सह्योजात ९८
रैनी बिन रंग कैसे ५२३
रोकत उतरि आई जहाँ ५४८
रोटी धरि आगे आंखि ३०६
लई उपजाय काल ३९
लई बात मानि मानो ४७
लई यही मानि फेरि १३६
लई सो तराजू जासों १४०
लकरीन बीनि करि ४०१
लकरीन मांझ डारि २७८
लगन हूँ लिखि दियौ ४५१
लगे जब तौलिबै कौं २४५
लगे वाके पाछे काँछे १७०
लगेई किनारे जाय चले १६६
लग्यो शाक पत्र पात्र ७२
लग्यो सीत गात सुनो ३१८
लग्यौ देन आधो फारि २७०
लड्डू नाम भक्त जाय ४०४
लपटानौ पाँयनि सौं ६२४
लरिकान संग पढौं बातैं ३३४
लरिवे कौं चलै आगै ६२१
लहँगा उतारि बेचि २९१
लाखा नाम भक्त वाकौ ४२२
लागी चटपटी भूप भक्ति ४८०
लागी चटपटी-अटपटी ५९५
लागी संग रानी दस २८६
लागे जब बेग-बेग ३१८
लागे जब संग युग २४०
लागे प्रान साथ सन्त ४७५
लाग्योई बढन गोंदा ६
लाज कौन काज जोपै ५८५
लाज दबि गयौ नृप ५१७
लाज दबि तिन दिये ४२४
लाजनि को मारयो राजा १६२
लाल अति रंग भरे ६११
लाल लै लड़ाये सन्त ६१७
लाल हिय सोच पयौ ४११
लालनि लड़ावै गुन गायकै ४७४
लावै वन बेर लागी ३५
लिखिकै पठायौ देश ५३९
लिखिकौ पठाई बाई करैं ६२२
लिखी प्रभु चीठी आपु १७७
लिख्यौ आयो साँच बाँचि ५३९
लिख्यौ दै पठाये वेगि ५५२
लिख्यौ पत्र माजी कौं ५५१
लिख्यौ लै दिवान नर ५५०
लिये जाय पांय लपटाय ३२४
लिये दाम काम कियौ ४४८
लिये संग कयौ जोई ५७३
लियो अनसन हाथ तजौं १९३
लियो कैसें जाइ तुम्हें १७६
लियो पहिचानि पूछ्यो ३०
लियौई निपट हठ बड़े ५०४
लीजियै छिनाइ यही वारि २३७
लीजै बात मानि जल १०४
लीला सुनिबै को हरियाने ३२६
लेत हौं परिच्छा मैं २९०
लेवो जू पिछानि तहँ २००
लेवो देश गाँव जाते १३५
लेवो भूमि गाउण बलि २१८
लेवो मोको संग करौ ३९६
लेवौ जू लिखाइ जोपै २३९
लेवौ देश गाँव सदा ५९९
लेवौ मति नाम साधु २२१
लै करि खडग ताहि ११९
लै कै आयो साधु मैं ३९५
लै कै उठि गये नये २६३
लै गये रिसायकैं फिराय १९३
लै गये लिवाय नाना ४९६
लै गये हुजूर नृप बोल्यौ ५०१
लैकै गये दूर देखि ५९
लैकै मिष्टान आय सुमुख ४९६
लैकैं कहाँ धरैं सरबरहू १४१
लैन कौं पठाये कही ५०१

लोग जानैं बौरौ भयौ	२८३
लोचन उघारिकै निहारि	१०
लौंडी आवै दैंन कछू	४१९
ल्याई एक डोला में	३५४
ल्याई सो लिवाइ जाति	१७८
ल्याये कर फूल ताके	१९५
ल्याये जा लिवाय कहै	८१
ल्याये बाँधि मारी बेंत	३१७
ल्याये वृन्दावन रासमंडल	४३१
ल्यायो एक काँटो लै	१४०
ल्यायौ कोऊ चोवा वाकौ	३६७
ल्यावो बेगि याही छिन	३४३
ल्यावो रे पकर वाके	२७७
ल्यावो रे पकरि ल्याये	४०६
ल्यावौ जू पकरि वाको	२६९
ल्यावौ जू बुलाइ एक	१३९
ल्यावौ जू बुलाय कह्यो	२४१
वन में रहति नाम	३१
वन्दन प्रवीन चाह निपट	१०१
वल्लभ हूँ संग सुर	५९३
वस्तु है तिहारी प्रभु	४६२
वह दुख हियें रह्यौ	४६१
वही इन कही पति देख्यो	१०५
वही ऋतु आई सुधि	३४०
वही भगवंत संत	९
वहू बात साँच याकी	३१९
वहै हरि ध्यान रूपमाधुरी	५७
वाकी एक सुता संग	४६१
वाको हुतो दांव मोपै	४११
वास कै तिजारे माँझ	५५९
वाही ठौर लीजै मेरो	२६३
वाही हाथ दीजियै लै	४३६
वाहू को बुलावौ	२९१
विदा पै न भये चले	४२७
विदा ह्वै पधारे नभ	११३
विधवा को गर्भ ताकी	१२८
विधि औ निषेध छेद	३६४
विनती करत करजोरि	४०३
विनती करत नामदेव	४०१
विनती करत बेटी	४४१
विप्र कै गुसाईं साधु	६२६
विप्र दृगहीन सो अनाथ	४८५
विप्र सो सुनावै सीता	१९०
विप्र हरिभक्ति करि	२५३
विप्र हू न छूए जाको	२५२
विफल उपाय बये तऊ	२७८
विमुख कौ लेत हरिदास	२३५
विमुख खिसाने भये गये	४४९
विमुख प्रसन्न भये तबतौ	४४७
विमुख विचारि तिया	५७३
विमुख समूह देखि संमुख	३१४
विमुख समूह लैकें किये	१२४
विमुख समूह संग माता	२७७
विविध बड़ाई में समाई	४९१
विविध बिछौना सेज	४८६
विविध वितान तान	२६४
विश्व के भरणहार धरे	७२
विषई कुटिल एक भेष	४७८
विषया भुजंग बलमीक	१८
विषया सुनाम अभिराम	६३
विषयी कुटिल चारि	३०३
विषयी बनिक एक देखि	२९८
विष्णुस्वामि सम्प्रदाई बडेई	१७८
वृन्दावन आईं जीव	४७९
वृन्दावन माधुरी अगाधकौ	३७५
वृन्दावन वास कौ हुलास	६१२
वृन्दावन व्रज भूमि जानत	३५८
वेई दें बताय श्रीकबीर	५८२
वेई सब सेवा करैं श्याम	१०९
वेई हरि उर धारि	३९५
वेगि जल ल्याई देखि	५७३
वेगि दै उतारि कर	२२७
वेगि दै बताय दीजै	२२०
वेगि लैकै आवौ मोकौं	४८०
वेद न पढावे कोऊ कहैं	१७९
वेश्या को प्रसंग सुनौ	२५०
वेसेहि सिंहास्न पै आनि	२६६
वैसे ही बजाओ बीन	४९
वैसे ही सरूप कियौ	५१८
वैसेई सरूप कई गई	१८८
वोही सुत नारायन	२४
व्याख्या करि दई नई	३३५
व्रत को तो नाम यहि	८३
शंख चक्र आदि छाप	४८३
शांत दास्य सख्य	४
शाह कौ सरूप करि	४३७
शिव सहचरी रँग भरी	४३३
शिवजी की बात	२०
शिष्यकी तौ योग्यताई	४००
शिष्यनि सों कह्यो कभूं	१२४
शेषावति नृप के पुरोहित	५८४
शोक करि आये धाम	५६८
शोभित तिलक भाल	८
शौच जल शेष पाय	५०९
श्यामजू बिचारि दीनी	५६
श्यामताई माँझ सों	३३०
श्रद्धा ई फुलेल	३
श्रवण वियोग सुनि तनक	७०
श्रवणरसिक कहूँ सुने न	९७
श्रीगुसाईं कर्णपूर पाछे	३६०
श्रीगुसाईं काशीश्वर आगे	३९८
श्रीगोपालभट्टजू के हिये	३७५
श्रीगोविन्दचन्द आय निसि	३६१
श्रीगोविन्दचन्द जू कौ भोर	५६५
श्रीगोविन्दचन्द रूपरासि	३८२
श्रीपति नारायन के	२५
श्रीप्रतापरुद्र गजपति कै	४०९
श्रीप्रबोधानन्द बड़े रसिक	६१२
श्रीमधुगोसाईं आये	३८०
श्रीमुरारिदास रहे राजगुरु	५०३
श्रीरंग के चेत धयौ	३०५
श्रीराधाकृष्ण कुंजकेलि	६१२
श्रीसुमेरदेव पिता सूबे	१२१
श्रोता दुख पाय भाखें	५२६
श्वेतदीप वासी सदा रूप	१०३
संग के पठाय दिये रहे	२०७
संग दै मशाल ताही	५९९
संग लै हजार शिष्य	१०८
संग लै हजार शिष्य	३३७
संग हुते बिप्र सुनि	२६६
संत उर आलवाल	६
सकल समाज मैं यौं	३७१
सगुन मनावैं एक देखिबोई	१०१
सघन विपिन ब्रह्मकुण्ड	५८७
सचिव सुवन सों जु	६६
सठता सतावै शीत	१५
सदना कसाई ताकी नीकी	३९४
सदा भगवान् आप भक्त	५४१
सदा साधुसेवा अनुराग	४०५
सनकादि दियो शाप	२५
सन्त आज्ञा पाइकै	२५२
सन्त एक जानिकै जताय	५२८
सन्त चरणामृत के माट	३८४
सन्त चरणामृतको ल्यावो	३८५
सन्त तन छूटेहूँ ते	६२३
सन्त दृग नये चले	६०९
सन्त देखि डरे सुख	२७५
सन्त पति बोले मैं	३२४
सन्त बधू गर्भ देखि उभै	१२०
सन्त सत पांचसात संग	३९३
सन्त साखि जानैं कलिकाल	१९०
सन्त सुख दैन बैठे	३६९
सन्त सुख मानि रहि	२१९
सन्तकौ सरूप धरि लै	४०८
सन्तनि जिंवाय नाना	५७६
सन्तनि जिंवायवे की निज	५४८
सन्तनि जिंवावौ भावै	५७७
सन्तनि समाज में	४७८
सन्तनि सहाय काज	१५
सपथ दिवाई न	२५८
सब समझावैं तब दण्ड	३६९
सब सुख साज रघुनाथ	२७
सबनि सुहाई जाय करी	५५५
सबभा मधि भूप कही	५५१
सबरी सों कह्यो तुम	३३
सबहीं हैं नित्त	१४
सबै विष भयौ दुख	५३५
सभाही की चाह अवगाह	२७
सम्वत् प्रसिद्ध दस सात	६३३
सरद उज्यारी रास रच्यौ	३७१
सरस्वती ध्यान कियौ	३३५
सहज सुभाय कोऊ	३३७
सहजकी रीतिमें प्रतीतसों	३८२
सहे अति कष्ट अंग	२६२
साँच कहि दीजै नहीं	५२७
साँचो भाव जानि	२५८
साँवरो कुवर यह कौन	३२२
सांचो भक्तिभाव जानि	२७१
सांवरो किशोर आप पूछे	३६२
साखी दै गोपाल अब	२३८
सागर संसार ताको	१८
सात सौ रुपैया गनि	४३६
साधु अपराध जहाँ होत	५८३
साधु एक गयौ गहि	३९३
साधुता न तजै कभूँ	१५८
सालंग है नाम मामा	४४३
सासु समुझावै कछु हाथ	२०३
साहिब तिसाये जाय	५९९
सिंह पै खवावौ चाहौ	६३४
सिलपिल्ले भक्ता उभै	१९८
सीत सीत प्रति क्यों न	८२
सीता के वियोग	२०
सीता ही सो रूप	२१
सीथ सों विमुख मैं	३८६
सीधौ लाय कोठे धयौ	५७७

सीस धरैं हाथ तन २८१
सुखद चरित्र सब रसिक ३६४
सुत की बढनि जोग ३१५
सुत को दिखाई देत भूत ११८
सुत बधू विधवा सों ४१५
सुत रघुनाथजूकों स्वप्नमें ३७८
सुता एक माली की १५०
सुता कौ विवाह भयौ ३७०
सुता ससुरारि भयौ ४३८
सुता हुतीं दोय भोय ४४२
सुतासों कहत तुम बैठि १४६
सुधि बुधि मेरी गई ४१२
सुनत वचन वाके दीन ५७४
सुनत विकल भई सुनिवे ५४२
सुनत ही आई देखि ४३९
सुनत ही तज्यो तन निज १२५
सुनत ही नृपबधु निपट १५९
सुनत ही पार्षद आये २४
सुनत ही माथौ फोरि ४५०
सुनत ही रानी प्रेम २५६
सुनत ही स्वर सुधि ५१
सुनत हीं आनि करि १३७
सुनि अभिराम नाम धाम ५११
सुनि आंसू भरि आये ४२१
सुनि आये गुरुवर कही ३९०
सुनि उठि गये बधू ४५७
सुनि एक साधु आयौ ६२४
सुनि क्रोध गयो मोद ८९
सुनि चन्द्रहास चलि वेगि ६७
सुनि जरि बरि गये २९६
सुनि जसवन्त जयसिंह ६२१
सुनि तजि दयो और ५१७
सुनि भरि आओ हियो ९१
सुनि लई यहि नेकु १८४
सुनि विदा होन गई ४८०
सुनि संत सभा ७
सुनि सब चौंकि परे ७७
सुनि सीखि लियो यों १०७
सुनि सुख भयो गयौ १९१
सुनि सुख भयौ भारी ६२२
सुनि सोच परयो हियो ५३
सुनिकै कटोरा भरि गरल ४७५
सुनिकै दीवान दुख ४८१
सुनिकै प्रभाव हरिदासनि २२
सुनिकै प्रसन्न भये ५०
सुनिकै प्रसन्न भये कहे ५०६
सुनी अचरज भरे नृपन २७५
सुनी एक भूप भक्त ४६५
सुनी गुरु आवत अमावत ६२७
सुनी गुरुदेव अधिकारी ६२६
सुनी जगदेव रीति प्रीति ६०७
सुनी जब बात मानौ ५०८
सुनी न त्रिपुरदास बोल्यो ३४३
सुनी यह रीति एक १५१
सुने हे अगर ७
सुनो एक बात सुत ९१
सुनौ एक और यों ५३९
सुनौ और परचै जो १३९
सुनौ कलिकाल बात और २२४
सुनौ चित्तलाई बात दूसरी २०८
सुनौ नृपसुता बात भक्ति २०१
सुनौ याकी बात मन ४००
सुनौ हरिचन्द कथा व्यथा ८६
सुन्दर स्वरूप स्याम ५७०
सुन्यो भागवती को बचन ७२
सुमिरन साँचो कियो लियो ९९
सुरथ सुधन्वा जू सों ८६
सूजा के दिवान भगवन्त ६२६
सूधो मन सूधी १९
सूरदास नाम नैंन कंज ४९८
सूरध्वज द्विज निज महल ५०२
सेज पधराइ गुरु चरचा ५५
सेत मुख भयौ विषैभाव ४७८
सेवक बुलाय कही कौनकी ३४२
सेवरा प्रबल वास केवरा १२४
सेवरा हराये वादी आये १२५
सेवहु करत डर लाग्यो २६३
सेवा अधिकार पायौ ३९८
सेवा अनुराग अंग अंग ३८२
सेवा अनुराग और ५३८
सेवा करि सावधान २३
सेवा करि सिद्धि साष्टांग ६०२
सेवा कै रिझाये याते ५६४
सेवा प्रभु करौं नेकु ८८
सेवा मनमोहनजू कूपमें ३७८
सेवा श्रीविहारीलाल गाई ६२५
सेवा सों छुटाय दई ३६९
सो तौ तैं लै कैद ५९८
सोई नित्यानन्द प्रभु महँत ३२९
सोई बात भई वह बाज्यो ७५
सोई लै प्रकाश घर घर १८७
सोई विसतार सुखसार ३६६
सोऊ ढिंग आइ रहौं १९४
सोमगिरि नाम अभिराम १६९
सोयो निशिरोया देखि २८२
सोयौ बादशाह निसि ५९८
सौंह को दिवाय दई २८७
सौंही आये लैन हरिजन ५३४
सौच संग जायबे की ३२७
स्तन पान कियो जियो २६०
स्याम कण्ठमाल टूटि ४४५
स्याम रंग रँगी पद ५२३
स्वामी करि ख्यात ताकी ४१०
स्वामी के जु शिष्य ५५९
स्वामी चतुर्भुज जू के ४९३
स्वामी जू सौं नातौ १५६
स्वामी हरिदास जू के ३७७
स्वामी हरिदास रसरास ३६७
स्वामीजू लिवाय ल्याये २९९
हत्या करि विप्र एक ५११
हत्या कौं प्रसंग करैं २४८
हनूमान वंश ही १२
हमहीं पठावैं काम करि ३८९
हमहूँ लै सेवा करैं ५०
हरि के जे वल्लभ २६
हरि को निहारैं उन ९४
हरि गुरु दासनि ९
हरि हरि नाम अभिराम ६८
हरि ही के रूप गुन ५३२
हरि ही कें आगे नृत्य ५६१
हरिगुण गाय साखी संतन २०७
हरिपाल नाम विप्र धाम २३५
हरीदास बनिक सो काशी ५७८
हरे हरे पाँव धरै ४८
हाकिम पकरि पूछै कहैं ३९७
हाट पै उतारि दई २९९
हाथ पै प्रसाद दीनौं ५३६
हारे लै बिडारे जाइ २४
हित की सचाई यहै ६०३
हित जू की रीति कोऊ ३६४
हित ही की बातें ५२
हिये आइ लागे सब २००
हिये धरि लई भीर ३३६
हिये में हुलास निज १३१
हिये हितरासि जग आस ५३०
हियें में सरूप सेवा करि १८७
हीरनि खचित रासमंडल ४३२
हुण्डी लिखि दई दाम ४३८
हुण्डी सो हजार की ४२८
हुती एक बाई कृष्ण १९२
हुती एक बाई ताको १९६
हुती घर मांझ बांझ ३०१
हुती छटी आँगुरी सो ६०
हुते एक ठौर नृप १५६
हुतो एक भाई बैरी २३१
हुतो एक भूप राम रूप १९०
हुतो एक साह तुलादान १३९
हुतो धन माल कन २६१
हुतो नृप एक ताके ५८
हुतो बालमीकि एक ७५
हूजिये कृपाल वही २८४
हृदै सरसाई जुपै २
हैंड़िया सराय मध्य ५६१
होत हो समाज सदा ५०५
होय करामात तोपै काहे १३४
होयके खिसाए द्विज २८०
ह्वै करि दयाल जा ५६०
ह्वै करि निरास ऋषि ४२
ह्वै करि निशंक रानी ५५०
ह्वै करि मगन काहू ६११
ह्वै कै तदाकार तन ३४५

* * * * * *

Ankur Nagpal
 # +91-9871740762
4/9-10, Vijay Nagar, Double Storey, Delhi - 110009
ankurnagpal108@gmail.com,
Facebook: ankur.nagpal.108